पश्चिम बंगाल सिविल सेवा (कार्यकारी) मुख्य परीक्षा

हिंदी

पत्र-लेखन · प्रतिवेदन · सार-लेखन · गद्यांश · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र (हल सहित)

10 मॉडल प्रश्न-पत्र · 2018–2023 के वास्तविक प्रश्न-पत्रों के पैटर्न पर

इन प्रश्न-पत्रों का उपयोग कैसे करें

- हर प्रश्न-पत्र WBCS मुख्य परीक्षा के हिंदी प्रश्न-पत्र की तरह बना है: 5 प्रश्न, हर प्रश्न 40 अंक का, कुल 200 अंक, समय 3 घंटे।
- पहले हर प्रश्न-पत्र का **प्रश्न-भाग** दिया गया है। घड़ी लगाकर 3 घंटे में उसे स्वयं हल करें।
- फिर उसके बाद दिए गए **हल** से अपने उत्तर मिलाएँ। प्रारूप, शब्द-सीमा और भाषा पर विशेष ध्यान दें।
- सभी गद्यांश और विषय नए हैं, पर स्तर और शैली पिछले वर्षों के प्रश्न-पत्रों जैसी ही है।

विषय-सूची

अभ्यास प्रश्न-पत्र 1

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 2

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 3

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 4

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 5

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 6

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 7

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 8

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 9

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 10

प्रश्न-पत्र हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

अभ्यास प्रश्न-पत्र 1

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

किसी एक विषय पर पत्र लिखिए; (क) और (ख) किसी समाचार पत्र के संपादक को तथा (ग) राज्य के शिक्षा विभाग को (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें):

(क) सड़कों पर आवारा पशुओं से बढ़ती दुर्घटनाएँ

(ख) सार्वजनिक पुस्तकालयों की बदहाली

(ग) ऑनलाइन पढ़ाई के बाद बच्चों का स्क्रीन पर बढ़ता समय

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

महानगरों में बढ़ता जल-भराव: हर बरसात की एक ही कहानी

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

समय संसार का सबसे बड़ा धन है, पर विडंबना यह है कि मनुष्य इसी धन को सबसे अधिक लापरवाही से लुटाता है। रुपया खो जाए तो फिर कमाया जा सकता है, स्वास्थ्य बिगड़ जाए तो उपचार से सुधर भी जाता है, किंतु जो क्षण एक बार हाथ से निकल गया, वह किसी भी मूल्य पर लौटकर नहीं आता। काल की धारा किसी की प्रतीक्षा नहीं करती; वह राजा और रंक, दोनों के आँगन से समान गति से बहती है। कोई उस धारा से अपने खेत सींच लेता है, तो कोई किनारे बैठा उसे बहते देखता रहता है। आलस्य मनुष्य का ऐसा शत्रु है जो मित्र का वेश धरकर आता है। वह कभी थकान का बहाना बनता है, कभी "कल कर लेंगे" का मीठा आश्वासन। यह कल अनंत प्रतीक्षा में बदल जाता है, जिसमें संकल्प गल जाते हैं और प्रतिभा जंग खाए औज़ार की तरह निकम्मी हो जाती है। जिन्होंने बड़े काम किए, उनके पास भी दिन के चौबीस घंटे ही थे; उन्होंने बस उन घंटों को व्यर्थ नहीं जाने दिया। परिश्रमी के लिए हर क्षण एक बीज है, जिसे वह कर्म की धरती में बो देता है; आलसी के लिए वही क्षण धूल है, जो उड़कर कहीं खो जाती है। इसलिए जो जीवन को सार्थक बनाना चाहता है, उसे सबसे पहले समय का आदर करना सीखना होगा।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

खेल को प्रायः मनोरंजन या समय बिताने का साधन मान लिया जाता है, पर उसका महत्त्व इससे कहीं गहरा है। खेल का मैदान वह पहली पाठशाला है, जहाँ बालक हार को स्वीकार करना, जीत में विनम्र रहना और नियमों का सम्मान करना सीखता है। वहाँ कोई अकेला नहीं जीतता; टीम का हर सदस्य जानता है कि उसकी छोटी-सी चूक पूरे दल पर भारी पड़ सकती है। यही भावना

आगे चलकर नागरिक को समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाती है। **जिस राष्ट्र के युवा मैदान पर ईमानदारी से खेलना सीख लेते हैं, वह राष्ट्र जीवन के बड़े मैदान में भी बेईमानी को आसानी से स्वीकार नहीं करता।** खेल अनुशासन, धैर्य और निरंतर अभ्यास का पाठ भी पढ़ाता है। कोई खिलाड़ी एक दिन में विजेता नहीं बनता; उसके पीछे बरसों तक भोर में उठकर किया गया अभ्यास, बहाया गया पसीना और झेली गई असफलताएँ छिपी होती हैं। जब हमारा कोई खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय मंच पर तिरंगा लहराता है, तो पूरा देश भाषा, धर्म और प्रांत के भेद भूलकर एक स्वर में उल्लास से भर उठता है। इस अर्थ में खेल राष्ट्रीय एकता का सबसे सरल और सुंदर सूत्र है। दुर्भाग्य से आज भी अनेक विद्यालयों में खेल की घंटी पढ़ाई की भेंट चढ़ जाती है और कई मैदानों पर इमारतें उग आई हैं। यदि हम सचमुच एक स्वस्थ, अनुशासित और एकजुट राष्ट्र चाहते हैं, तो हमें खेल को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाना होगा।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) लेखक खेल के मैदान को बालक की "पहली पाठशाला" क्यों कहता है?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

In 1901, Rabindranath Tagore started a small school at Santiniketan, in the quiet countryside of Bengal. As a boy, he had disliked the closed classrooms of the schools he was sent to, and he wanted children to learn in freedom and joy. So in his school, classes were often held in the open air, under the shade of trees. The students sat on the ground around their teacher, with the sky above them and the fields all around. They watched the seasons change, listened to the birds, and learned music and art along with their lessons. Tagore believed that a child's mind grows best in harmony with nature. This small school later grew into Visva-Bharati, a university that still welcomes students from many lands.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) सड़कों पर आवारा पशुओं से बढ़ती दुर्घटनाएँ

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: सड़कों पर आवारा पशुओं के कारण बढ़ती दुर्घटनाओं की ओर ध्यान दिलाने हेतु।

महोदय,

शहर और उपनगरों की सड़कों पर घूमते आवारा पशु अब केवल असुविधा नहीं, जान का ख़तरा बन चुके हैं। व्यस्त चौराहों से लेकर राजमार्गों तक गाय-बैल और कुत्तों के झुंड कहीं बीच सड़क पर बैठे मिलते हैं, कहीं इधर-उधर भटकते। रात के अँधेरे में ये अचानक गाड़ियों के सामने आ जाते हैं और सबसे ज़्यादा चपेट में दोपहिया वाहन-चालक आते हैं। ऐसे हादसों में कई लोग अपंग हो चुके हैं, कुछ की तो जान भी चली गई। दरअसल, कई पशुपालक दूध दुहने के बाद पशुओं को खुला छोड़ देते हैं और नगर निगम की कार्रवाई काग़ज़ों तक सिमटकर रह जाती है।

आपके लोकप्रिय दैनिक के माध्यम से मेरा प्रशासन से अनुरोध है कि पशुओं को खुला छोड़ने वालों पर भारी जुर्माना लगे, पर्याप्त कांजी हाउस और गोशालाएँ बनें तथा कुत्तों के बंध्याकरण और टीकाकरण का अभियान नियमित रूप से चले। आशा है, संबंधित विभाग जल्द ठोस कदम उठाएगा।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 14 जुलाई 2026

परीक्षा-संकेत

पत्र के अंत में समस्या के साथ दो-तीन व्यावहारिक सुझाव अवश्य दें; केवल शिकायत वाला पत्र अधूरा माना जाता है। विषय-पंक्ति छोटी और स्पष्ट रखें।

(ख) सार्वजनिक पुस्तकालयों की बदहाली

सेवा में,
संपादक महोदय,
प्रभात ख़बर,
कोलकाता।

विषय: सार्वजनिक पुस्तकालयों की दयनीय दशा के संबंध में।

महोदय,

कभी मोहल्ले का सार्वजनिक पुस्तकालय ऐसी जगह हुआ करता था, जहाँ विद्यार्थी, बुज़ुर्ग और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवा घंटों बैठकर पढ़ते थे। आज राज्य के अनेक पुस्तकालयों की हालत देखकर मन दुखी हो जाता है। इनके भवन जर्जर हैं, छतें टपकती हैं और अलमारियों में रखी किताबों को दीमक चाट रही है। बरसों से न नई पुस्तकें आई हैं, न पत्रिकाएँ। कर्मचारियों के पद ख़ाली पड़े हैं, इसलिए कई पुस्तकालय हफ़्ते में दो-तीन दिन ही खुल पाते हैं और पाठक अब इनकी ओर झाँकते तक नहीं।

सरकार से मेरा निवेदन है कि पुस्तकालयों की मरम्मत के लिए अलग कोष बने, रिक्त पदों पर तुरंत नियुक्ति हो और किताबों के साथ इंटरनेट से जुड़े अध्ययन-कक्ष भी बनाए जाएँ। आशा है, आप इस पत्र को छापकर यह बात ज़िम्मेदार लोगों तक पहुँचाएँगे। पढ़ने की संस्कृति बचेगी, तभी समाज जागरूक बना रहेगा।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 14 जुलाई 2026

परीक्षा-संकेत

"कमी... आज..." जैसी तुलना से पत्र में जान आ जाती है। अंतिम पंक्ति को एक छोटे, प्रभावी वाक्य पर समाप्त करें।

(ग) ऑनलाइन पढ़ाई के बाद बच्चों का स्क्रीन पर बढ़ता समय

सेवा में,

सचिव महोदय,

विद्यालय शिक्षा विभाग,

पश्चिम बंगाल सरकार,

कोलकाता।

विषय: बच्चों का स्क्रीन पर बढ़ता समय घटाने के लिए दिशा-निर्देश जारी करने हेतु।

महोदय,

मैं एक अभिभावक हूँ और विभाग के सामने वह चिंता रखना चाहता हूँ, जो आज लगभग हर घर की है। महामारी के दिनों में ऑनलाइन कक्षाएँ मजबूरी थीं, पर विद्यालय खुलने के बाद भी गृहकार्य, अभ्यास-पत्र और सूचनाएँ फ़ोन पर ही भेजी जा रही हैं। नतीजतन छोटे बच्चे भी रोज़ कई घंटे स्क्रीन के सामने बिताने लगे हैं। उनकी आँखें कमज़ोर हो रही हैं, नींद कम हो गई है, खेल-कूद छूट गया है और स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया है। पढ़ाई के बहाने शुरू हुई यह आदत अब वीडियो और मोबाइल खेलों की लत बनती जा रही है।

विभाग से मेरा अनुरोध है कि प्राथमिक कक्षाओं में फ़ोन से भेजे जाने वाले गृहकार्य की सीमा तय हो, विद्यालयों में खेल और पुस्तकालय की घंटी अनिवार्य की जाए तथा अभिभावकों और शिक्षकों के लिए जागरूकता-शिविर लगें। आशा है, बच्चों के स्वास्थ्य को देखते हुए विभाग शीघ्र उचित निर्देश जारी करेगा।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 14 जुलाई 2026

परीक्षा-संकेत

सरकारी विभाग को लिखे पत्र में "संपादक महोदय" नहीं, विभाग के अधिकारी (सचिव/निदेशक) को संबोधित करें और भाषा अधिक औपचारिक रखें। समाचार पत्र वाली भूमिका ("आपके दैनिक के माध्यम से") यहाँ न लिखें।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

हर बरसात में डूबती सड़कें, हर बार वही आश्वासन

कोलकाता, 14 जुलाई (निज संवाददाता)। मानसून की पहली तेज़ बारिश ने एक बार फिर महानगर की तैयारियों की पोल खोल दी। शुक्रवार रात से शनिवार सुबह तक हुई मूसलाधार वर्षा के बाद उत्तर और मध्य कोलकाता के कई निचले इलाक़ों में घुटनों तक पानी भर गया। दफ़्तर जाने वाले लोग घंटों जाम में फँसे रहे और कई जगह बसें बीच सड़क पर बंद हो गईं।

यह हाल अकेले कोलकाता का नहीं है। मुंबई, दिल्ली, चेन्नई और बेंगलुरु जैसे महानगर भी हर साल ऐसे ही दृश्य देखते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि पुरानी जल-निकासी व्यवस्था बढ़ती आबादी का बोझ नहीं उठा पा रही। तालाबों और नहरों को पाटकर इमारतें खड़ी कर दी गईं, नालों में प्लास्टिक और कचरा जमा है और बरसात से पहले की सफ़ाई अक्सर अधूरी रह जाती है।

नगर निगम के एक अधिकारी ने दावा किया कि जल-निकासी के पंप पूरी क्षमता से चलाए गए और कुछ ही घंटों में अधिकांश सड़कों से पानी निकाल दिया गया। दूसरी ओर, नागरिक संगठनों की माँग है कि नालों की सफ़ाई सालभर हो, जलाशयों पर अतिक्रमण रुके और नई योजनाओं में बारिश के पानी की निकासी पहले सोची जाए। जब तक ऐसा नहीं होता, हर बरसात यही कहानी दोहराती रहेगी।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> प्रतिवेदन में शीर्षक, स्थान-तिथि और संवाददाता का उल्लेख अनिवार्य है। समस्या, कारण, प्रशासन का पक्ष और जनता की माँग, इस क्रम में लिखने से उत्तर संतुलित लगता है; मनगढ़ंत आँकड़े न दें।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: समय का मूल्य

समय सबसे बड़ा धन है; खोया धन और बिगड़ा स्वास्थ्य लौट आते हैं, बीता क्षण नहीं। काल सबके लिए एक-सा बहता है, पर उसका लाभ कोई-कोई ही उठाता है। आलस्य मित्र बनकर आता है और टालमटोल से संकल्प और प्रतिभा, दोनों को नष्ट कर देता है। महापुरुषों के पास भी उतने ही घंटे थे, बस उन्होंने उन्हें व्यर्थ नहीं जाने दिया। अतः सार्थक जीवन के लिए समय का आदर आवश्यक है।

(मूल गद्यांश: 217 शब्द; सार: 71 शब्द)

> **परीक्षा-संकेत**
>
> सार में मूल के उदाहरण और उपमाएँ (बीज, धूल, जंग खाया औज़ार) छोड़ दें, केवल विचार रखें। शीर्षक छोटा हो और सार का केंद्रीय भाव उसी से झलके।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

शीर्षक: खेल — राष्ट्र-निर्माण की पाठशाला

गद्यांश का मूल भाव यह है कि खेल केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि चरित्र गढ़ने का साधन है। खेल के मैदान पर बालक ईमानदारी, अनुशासन, धैर्य और टीम-भावना सीखता है, और यही गुण आगे चलकर उसे एक उत्तरदायी नागरिक बनाते हैं। खेल देश को एकता के

सूत्र में भी बाँधता है। इसलिए "खेल — राष्ट्र-निर्माण की पाठशाला" शीर्षक पूरे गद्यांश के आशय को सबसे सटीक ढंग से व्यक्त करता है। "खेल और राष्ट्रीय चरित्र" भी उपयुक्त शीर्षक होगा।

(ख) खेल का मैदान "पहली पाठशाला" क्यों?

लेखक खेल के मैदान को बालक की पहली पाठशाला इसलिए कहता है, क्योंकि जीवन के कई ज़रूरी पाठ वह किताबों से पहले वहीं सीखता है। मैदान पर उसे हार को सहजता से स्वीकार करना पड़ता है और जीत मिलने पर भी विनम्र बने रहना होता है। वहाँ हर खिलाड़ी को नियमों के भीतर रहकर ही खेलना होता है, इसलिए वह नियमों का सम्मान करना भी सीख जाता है। टीम में खेलते हुए उसे समझ आता है कि उसकी छोटी-सी भूल पूरे दल को हरा सकती है। इस तरह वहीं उसमें उत्तरदायित्व और सहयोग की भावना जन्म लेती है, जो आगे चलकर उसे समाज और राष्ट्र के प्रति ज़िम्मेदार नागरिक बनाती है।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

इस पंक्ति में लेखक खेल और जीवन के बीच एक सुंदर तुलना करता है। खेल का मैदान छोटा है और जीवन का मैदान बड़ा, पर दोनों में नियम और ईमानदारी की परीक्षा होती है। जो युवा बचपन से खेल में धोखा न देने, नियम न तोड़ने और प्रतिद्वंद्वी का सम्मान करने का अभ्यास करते हैं, उनके स्वभाव में ईमानदारी रच-बस जाती है। बड़े होकर वे नौकरी, व्यापार या राजनीति, किसी भी क्षेत्र में बेईमानी को सहज भाव से स्वीकार नहीं करते। जब ऐसे नागरिकों की संख्या बढ़ती है, तो पूरे राष्ट्र का चरित्र ईमानदार और मज़बूत बनता है।

(घ) सारांश

खेल मनोरंजन से कहीं बढ़कर है। खेल के मैदान पर बालक हार-जीत को सहना, नियमों का सम्मान करना और टीम के प्रति उत्तरदायी होना सीखता है; यही गुण उसे अच्छा नागरिक बनाते हैं। खेल अनुशासन, धैर्य और परिश्रम सिखाता है और देश को एकता के सूत्र में बाँधता है। दुर्भाग्य से विद्यालयों में खेल की उपेक्षा हो रही है। स्वस्थ और एकजुट राष्ट्र के लिए खेल को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाना होगा।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> हर उत्तर गद्यांश के आधार पर ही दें, अपनी ओर से नए तथ्य न जोड़ें। आशय वाले प्रश्न में पंक्ति को दोहराने के बजाय उसका भाव अपने शब्दों में खोलें।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

सन् 1901 में रवींद्रनाथ ठाकुर ने बंगाल के शांत ग्रामीण अंचल में बसे शांतिनिकेतन में एक छोटा-सा विद्यालय शुरू किया। बचपन में उन्हें उन विद्यालयों की बंद कक्षाएँ कभी अच्छी नहीं लगी थीं, जिनमें उन्हें पढ़ने भेजा गया था। वे चाहते थे कि बच्चे स्वतंत्रता और आनंद के वातावरण में सीखें। इसीलिए उनके विद्यालय में अक्सर कक्षाएँ खुले आकाश के नीचे, पेड़ों की छाँव में लगती थीं। विद्यार्थी अपने गुरु के चारों ओर ज़मीन पर बैठते; ऊपर खुला आसमान होता और चारों ओर खेत। वे बदलती ऋतुओं को निहारते, पक्षियों का कलरव सुनते और पढ़ाई के साथ-साथ संगीत और कला भी सीखते। रवींद्रनाथ मानते थे कि बच्चे का मन प्रकृति की गोद में ही सबसे अच्छी तरह खिलता है। आगे चलकर यही छोटा-सा विद्यालय बढ़कर विश्वभारती विश्वविद्यालय बना, जहाँ आज भी अनेक देशों से विद्यार्थी पढ़ने आते हैं।

परीक्षा-संकेत

"खुली हवा में" के बजाय "खुले आकाश के नीचे" लिखा, जो हिंदी में अधिक स्वाभाविक है। "प्रकृति के साथ सामंजस्य में" जैसे शाब्दिक अनुवाद की जगह "प्रकृति की गोद में" रखा। "जिन विद्यालयों में उन्हें भेजा गया" वाले लंबे अंग्रेज़ी वाक्य को दो सरल हिंदी वाक्यों में तोड़ा।

अभ्यास प्रश्न-पत्र 2

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

किसी एक विषय पर किसी समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें):

(क) होटलों और ढाबों में बाल श्रम

(ख) शहर में रोज़ का ट्रैफ़िक जाम

(ग) बुज़ुर्गों के लिए डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

चक्रवात के बाद सुंदरबन के गाँवों में राहत-कार्य

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

मनुष्य के जीवन में स्वावलंबन वह धुरी है जिस पर उसके चरित्र का सारा चक्र घूमता है। जो व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा होना सीख लेता है, उसे संसार की आँधियाँ नहीं डिगा पातीं। पराए सहारे पर टिका जीवन उस लता के समान है जो वृक्ष के गिरते ही धूल में मिल जाती है। स्वावलंबन का अर्थ अहंकार में डूबकर सबसे कट जाना नहीं है; इसका अर्थ है अपनी शक्ति को पहचानना और अपने कर्तव्य का भार स्वयं उठाना। यह शक्ति परिश्रम से ही जन्म लेती है। जो हाथ श्रम से जी चुराते हैं, वे अंततः दूसरों के आगे फैलते हैं। इतिहास साक्षी है कि राष्ट्रों का उत्थान किसी दैवी कृपा से नहीं, बल्कि उनके नागरिकों के अथक श्रम से हुआ है। किसान जब जेठ की दुपहरी में हल चलाता है, तो वह केवल अन्न ही नहीं उपजाता, आत्मसम्मान की फ़सल भी उगाता है। भाग्य का रोना वही रोते हैं जिन्होंने कर्म का द्वार कभी खटखटाया ही नहीं। परिश्रम मनुष्य को विनम्र भी बनाता है, क्योंकि श्रम करने वाला जानता है कि हर उपलब्धि के पीछे कितना पसीना बहता है। जो समाज अपने युवकों को स्वावलंबी और श्रमशील बनाता है, वही सच्चे अर्थों में स्वतंत्र और समृद्ध होता है। दूसरों की कृपा से मिली समृद्धि क्षणिक होती है, पर अपने श्रम से अर्जित सुख स्थायी और गौरवपूर्ण होता है।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

एक समय था जब घरों में पुस्तकों की अलमारी को परिवार की सबसे क़ीमती पूँजी माना जाता था। गर्मी की छुट्टियों में बच्चे मोहल्ले के पुस्तकालय से कहानियों की किताबें लाते और दोपहर भर उनमें डूबे रहते। आज बच्चे ही नहीं, बड़े भी अपना ख़ाली समय स्क्रीन पर उँगलियाँ फिराते हुए बिता देते हैं। छोटे-छोटे वीडियो और चटपटी सूचनाओं की बाढ़ ने धैर्य से पढ़ने की आदत

को भीतर से खोखला कर दिया है। लोग जानकारी तो बहुत बटोर लेते हैं, पर किसी विषय में गहरे उतरने का अवकाश उनके पास नहीं रहता। **पुस्तक पाठक से समय माँगती है, और बदले में उसे चिंतन की वह गहराई देती है जो किसी त्वरित सूचना से नहीं मिल सकती।** जब हम कोई उपन्यास पढ़ते हैं, तो दूसरों के सुख-दुख में जीना सीखते हैं; जब इतिहास या दर्शन पढ़ते हैं, तो अपनी सोच को कसौटी पर कसते हैं। पढ़ने की आदत घटने का अर्थ है कल्पना, संवेदना और तर्क, तीनों का धीरे-धीरे क्षीण होना। फिर भी इसका सारा दोष तकनीक के माथे मढ़ देना ठीक नहीं। परिवार और विद्यालय भी पढ़ने का वातावरण बनाने में पीछे छूट गए हैं। यदि माता-पिता स्वयं बच्चों के सामने किताब लेकर बैठें, विद्यालयों में पुस्तकालय की घंटी को गंभीरता से लिया जाए और जन्मदिन पर उपहार में पुस्तकें दी जाएँ, तो यह आदत फिर लौट सकती है। आख़िर पुस्तकें मनुष्य की सबसे पुरानी और सबसे भरोसेमंद मित्र हैं।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) लेखक के अनुसार पढ़ने की आदत क्यों घट रही है और इसका क्या दुष्परिणाम है?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

On 11 September 1893, the World's Parliament of Religions opened in Chicago. Among the speakers was a young monk from India, Swami Vivekananda, a disciple of Sri Ramakrishna, who had travelled all the way across the world to be there. When his turn came, he began his address with the words "Sisters and Brothers of America". At once the large audience rose to its feet and applauded for a long time. In his short speech he spoke of tolerance and universal acceptance. He compared the different religions to streams that rise in different places but all mingle their water in the sea. He ended with the hope that the bell which had tolled that morning would be the death-knell of all fanaticism. That one speech made his name known across America.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) होटलों और ढाबों में बाल श्रम

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: होटलों और ढाबों में बाल श्रम पर रोक लगाने के संबंध में।

महोदय,

शहर के किसी भी ढाबे या छोटे होटल में चले जाइए, दस-बारह बरस का कोई-न-कोई बच्चा बर्तन माँजता, मेज़ पोंछता या चाय पहुँचाता ज़रूर दिख जाएगा। सुबह से आधी रात तक खटने वाले इन बच्चों को न ढंग का खाना मिलता है, न आराम; ऊपर से मालिक की डाँट-मार अलग। जिस उम्र में इनके हाथों में किताबें होनी चाहिए, उस उम्र में ये जूठी थालियाँ उठा रहे हैं। क़ानून की नज़र में बाल श्रम अपराध है, फिर भी जाँच के नाम पर खानापूर्ति ही होती है।

आपके दैनिक के माध्यम से मैं श्रम विभाग से माँग करता हूँ कि वह नियमित छापे मारकर दोषी मालिकों पर कड़ी कार्रवाई करे और छुड़ाए गए बच्चों की पढ़ाई तथा पुनर्वास का प्रबंध करे। हम ग्राहकों को भी ऐसे प्रतिष्ठानों से मुँह मोड़ लेना चाहिए। आशा है, आप यह पत्र प्रकाशित करेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 14 जुलाई 2026

परीक्षा-संकेत

शुरुआत किसी आँखों देखे दृश्य से करें; इससे पत्र पहली पंक्ति से ही पाठक को बाँध लेता है। समस्या, दुष्परिणाम और ठोस सुझाव, तीनों आने चाहिए और अंत में प्रकाशन का अनुरोध एक पंक्ति में कर दें।

(ख) शहर में रोज़ का ट्रैफ़िक जाम

सेवा में,

संपादक महोदय,

प्रभात ख़बर,

कोलकाता।

विषय: शहर में रोज़ लगने वाले ट्रैफ़िक जाम की समस्या।

महोदय,

आपके समाचार पत्र के ज़रिए मैं अधिकारियों का ध्यान उस जाम की ओर दिलाना चाहता हूँ, जो अब इस शहर की रोज़ की पहचान बन गया है। दफ़्तर के समय चार-पाँच किलोमीटर की दूरी तय करने में घंटा भर लग जाता है। विद्यार्थी देर से परीक्षा-केंद्र पहुँचते हैं, नौकरीपेशा लोग रोज़ अफ़सर की झिड़की सुनते हैं और कई बार एंबुलेंस तक जाम में फँसी रह जाती है। इसके पीछे कई कारण हैं: फुटपाथों और सड़कों पर अतिक्रमण, जहाँ-तहाँ खड़ी गाड़ियाँ, बीच सड़क पर सवारी उठाते वाहन और यातायात नियमों की खुली अनदेखी। मरम्मत के लिए खोदी गई सड़कें भी महीनों वैसी ही पड़ी रहती हैं। मेरा अनुरोध है कि व्यस्त चौराहों पर यातायात पुलिस बढ़ाई जाए, अवैध पार्किंग पर सख़्ती हो, बसों के ठहराव तय हों और सार्वजनिक परिवहन को और सुविधाजनक बनाया जाए। नागरिक भी नियमों का पालन करें, तभी शहर की रफ़्तार लौटेगी।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 14 जुलाई 2026

परीक्षा-संकेत

कारण गिनाते समय कोलन के बाद एक ही वाक्य में सूची दें; इससे शब्द बचते हैं और पत्र 150 शब्दों की सीमा में रहता है।

(ग) बुज़ुर्गों के लिए डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक विश्वमित्र,

कोलकाता।

विषय: बुज़ुर्गों के लिए डिजिटल साक्षरता की आवश्यकता।

महोदय,

आज बैंक, पेंशन और बिजली के बिल से लेकर डॉक्टर से समय लेने तक, लगभग हर काम स्मार्टफ़ोन और इंटरनेट से जुड़ गया है। नई पीढ़ी के लिए यह सुविधा है, पर हमारे बुज़ुर्गों के लिए यह बदलाव किसी पहेली से कम नहीं। बहुत-से बुज़ुर्ग छोटे कामों के लिए बच्चों या पड़ोसियों पर निर्भर रहते हैं और इसी अनजानेपन में ऑनलाइन ठगी के शिकार भी हो जाते हैं। जो लोग जीवन भर आत्मनिर्भर रहे, उन्हें यह परावलंबन भीतर तक चुभता है। मेरा सुझाव है कि नगर निगम, बैंक और स्वयंसेवी संस्थाएँ मिलकर मोहल्लों और पुस्तकालयों में बुज़ुर्गों के लिए सरल डिजिटल प्रशिक्षण-शिविर लगाएँ। इनमें उन्हें उनकी अपनी भाषा में ऑनलाइन भुगतान, सुरक्षित पासवर्ड बनाना और ठगी से बचने के उपाय सिखाए जाएँ। घर के युवा भी झुँझलाने के बजाय धैर्य से उनका हाथ थामें। डिजिटल भारत का सपना तभी पूरा होगा, जब हमारे बुज़ुर्ग भी इसमें बराबर के भागीदार बनेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 14 जुलाई 2026

परीक्षा-संकेत

सुझाव देते समय यह भी लिखें कि काम कौन करे (नगर निगम, बैंक, परिवार)। ठोस सुझाव परीक्षक पर अच्छा प्रभाव छोड़ते हैं।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

चक्रवात के बाद सुंदरबन में राहत की जद्दोजहद, टूटे तटबंधों ने बढ़ाई मुश्किलें

कोलकाता, 28 मई (निज संवाददाता)। पिछले सप्ताह आए भीषण चक्रवात के बाद दक्षिण 24 परगना के सुंदरबन इलाक़े में राहत-कार्य तेज़ कर दिया गया है। गोसाबा, बासंती, पाथरप्रतिमा और सागरद्वीप के कई गाँवों में अब भी घुटनों तक खारा पानी भरा है। तेज़ हवाओं और ऊँची लहरों ने अनेक जगह नदी-तटबंध तोड़ दिए, जिससे खेतों और तालाबों में समुद्र का पानी घुस आया। कच्चे मकान ढह गए हैं और हज़ारों परिवार स्कूलों तथा चक्रवात-आश्रयों में दिन काट रहे हैं।

राज्य और राष्ट्रीय आपदा मोचन बल की टीमें नावों से टापुओं तक पहुँचकर फँसे लोगों को निकाल रही हैं। प्रशासन की ओर से सूखा राशन, तिरपाल, पीने का पानी और दवाइयाँ बाँटी जा रही हैं। स्वास्थ्य विभाग ने जगह-जगह चिकित्सा-शिविर लगाए हैं, ताकि दस्त और चर्म-रोग न फैलें। कई स्वयंसेवी संस्थाएँ और स्थानीय युवक भी सामुदायिक रसोई चलाकर मदद में जुटे हैं।

फिर भी ग्रामीणों की शिकायत है कि भीतरी गाँवों तक राहत देर से और कम पहुँच रही है। सबसे बड़ी चिंता खारे पानी से चौपट हुई खेती और मछली-पालन की है, जिसे सँभलने में लंबा समय लगेगा। पर्यावरणविदों की राय है कि पक्के तटबंध और मैंग्रोव वनों का विस्तार ही भविष्य में ऐसी तबाही से बचाव का स्थायी उपाय है।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> स्थान-तिथि वाली पंक्ति के बाद तीन अनुच्छेद रखें: स्थिति, राहत-कार्य, फिर कमियाँ और सुझाव। प्रभावित प्रखंडों के सही नाम (गोसाबा, पाथरप्रतिमा) प्रतिवेदन को विश्वसनीय बनाते हैं; संख्या के लिए "अनेक", "हज़ारों" जैसे शब्द काफ़ी हैं।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: स्वावलंबन और परिश्रम

स्वावलंबन चरित्र की आधारशिला है। अपने बल पर खड़ा व्यक्ति कठिनाइयों से नहीं डिगता, जबकि पराश्रित जीवन सहारा छिनते ही ढह जाता है। स्वावलंबन का अर्थ अहंकारवश अलग-थलग होना नहीं, बल्कि अपनी शक्ति पहचानकर अपना दायित्व स्वयं निभाना है। यह शक्ति परिश्रम से मिलती है। राष्ट्रों की उन्नति भी नागरिकों के श्रम से ही होती है। श्रम आत्मसम्मान भी देता है और विनम्रता भी। इसीलिए स्वावलंबी और परिश्रमी समाज ही सच्चे अर्थों में स्वतंत्र और समृद्ध होता है।

(मूल गद्यांश: 219 शब्द; सार: 78 शब्द)

> **परीक्षा-संकेत**
>
> लिखने से पहले मूल के मुख्य विचार गिन लें (यहाँ छह-सात हैं) और हर विचार को एक छोटा वाक्य दें; लता और किसान जैसे दृष्टांत सार में नहीं आते।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

शीर्षक: पुस्तकें पढ़ने की घटती आदत

यह शीर्षक इसलिए उपयुक्त है कि पूरा गद्यांश इसी एक चिंता के इर्द-गिर्द घूमता है। लेखक पहले उस समय को याद करता है जब घरों में पुस्तकों का आदर था, फिर बताता है कि आज स्क्रीन और त्वरित सूचनाओं ने पढ़ने की आदत को कमज़ोर कर दिया है। अंत में वह इस आदत को लौटाने के उपाय भी सुझाता है। इस प्रकार समस्या, उसके कारण और समाधान, तीनों इस शीर्षक में समा जाते हैं। चाहें तो "पुस्तकें: सबसे भरोसेमंद मित्र" शीर्षक भी दिया जा सकता है।

(ख) पढ़ने की आदत घटने के कारण और दुष्परिणाम

लेखक के अनुसार पढ़ने की आदत घटने का सबसे बड़ा कारण स्क्रीन का बढ़ता आकर्षण है। छोटे वीडियो और चटपटी सूचनाओं ने लोगों का धैर्य छीन लिया है; वे जानकारी तो बटोरते हैं, पर किसी विषय में गहरे नहीं उतरते। साथ ही लेखक मानता है कि अकेली तकनीक दोषी नहीं है, परिवार और विद्यालय भी पढ़ने का माहौल बनाने में पीछे रह गए हैं। इसका दुष्परिणाम यह है कि मनुष्य की कल्पना-शक्ति, संवेदनशीलता और तर्क-क्षमता धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है। दूसरों के सुख-दुख को समझने और अपनी सोच को परखने का अभ्यास छूटता जा रहा है।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

रेखांकित पंक्ति है: "पुस्तक पाठक से समय माँगती है, और बदले में उसे चिंतन की वह गहराई देती है जो किसी त्वरित सूचना से नहीं मिल सकती।"

इसका आशय यह है कि पुस्तक पढ़ना जल्दबाज़ी का काम नहीं है। उसके लिए पाठक को धैर्य से बैठना पड़ता है, पन्ने-दर-पन्ने लेखक के विचारों के साथ चलना पड़ता है। यह समय व्यर्थ नहीं जाता, क्योंकि इसके बदले पुस्तक उसे किसी विषय की गहरी समझ और स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता देती है। इसके विपरीत, पल भर में मिलने वाली सूचनाएँ हमें केवल ऊपरी जानकारी देती हैं, सोचने-विचारने का अवसर नहीं। यानी पुस्तक के साथ बिताया समय एक प्रकार का निवेश है, जिसका फल चिंतन की गहराई के रूप में मिलता है।

(घ) सारांश

पहले घरों में पुस्तकों का बड़ा आदर था, पर आज स्क्रीन और त्वरित सूचनाओं ने धैर्य से पढ़ने की आदत कमज़ोर कर दी है। पुस्तकें समय तो माँगती हैं, पर बदले में गहरा चिंतन, संवेदना, कल्पना और तर्क देती हैं। इस गिरावट के लिए तकनीक के साथ परिवार और विद्यालय भी ज़िम्मेदार हैं। यदि बड़े स्वयं पढ़ें, विद्यालय पुस्तकालय को महत्त्व दें और उपहार में पुस्तकें दी जाएँ, तो यह आदत लौट सकती है, क्योंकि पुस्तकें मनुष्य की सबसे भरोसेमंद मित्र हैं।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> प्रत्येक भाग का उत्तर अलग शीर्षक के साथ लिखें। आशय वाले प्रश्न में पहले पंक्ति उद्धृत करें, फिर अपने शब्दों में व्याख्या करें; गद्यांश के वाक्य ज्यों-के-त्यों न उतारें।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

11 सितंबर 1893 को शिकागो में विश्व धर्म महासभा का शुभारंभ हुआ। वक्ताओं में भारत के एक युवा संन्यासी भी थे: श्रीरामकृष्ण के शिष्य स्वामी विवेकानंद, जो दुनिया के दूसरे छोर से लंबी यात्रा करके वहाँ पहुँचे थे। जब उनकी बारी आई, तो उन्होंने अपना भाषण "अमेरिका की बहनो और भाइयो" शब्दों से आरंभ किया। यह सुनते ही सभागार में बैठे विशाल जनसमूह ने खड़े होकर देर तक तालियाँ बजाईं। अपने छोटे-से भाषण में उन्होंने सहिष्णुता और सबको अपनाने की भावना पर बल दिया। उन्होंने विभिन्न धर्मों की तुलना उन धाराओं से की, जो अलग-अलग स्थानों से निकलती हैं, पर अंत में सब अपना जल सागर में ही मिला देती हैं। अंत में उन्होंने आशा प्रकट की कि उस दिन सुबह जो घंटा बजा था, वह हर तरह की धर्मांधता का मृत्यु-निनाद सिद्ध हो। इस एक भाषण ने उन्हें पूरे अमेरिका में प्रसिद्ध कर दिया।

परीक्षा-संकेत

"सिस्टर्स एंड ब्रदर्स ऑफ़ अमेरिका" का अनुवाद संबोधन-रूप में "अमेरिका की बहनो और भाइयो" किया गया है (बिना अनुस्वार)। "डेथ-नेल" के लिए शब्दशः "मौत की घंटी" के बजाय "मृत्यु-निनाद" रखा गया है, जो घंटे के बिंब को भी बचाए रखता है, और "यूनिवर्सल एक्सेप्टेंस" को "सबको अपनाने की भावना" लिखा है, जो हिंदी में अधिक सहज लगता है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र 3

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

किसी एक विषय पर पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें):

(क) प्लास्टिक थैलियों पर लगे प्रतिबंध का ढीला पालन — किसी समाचार पत्र के संपादक को।

(ख) विद्यालयों में खेल के मैदानों की कमी — किसी समाचार पत्र के संपादक को।

(ग) गाँवों के स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टरों की कमी — राज्य के स्वास्थ्य विभाग को।

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

युवाओं में नशे की बढ़ती प्रवृत्ति: समाज के लिए चेतावनी

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

मित्रता का मूल्य प्रायः तभी समझ में आता है, जब जीवन में कोई कठिन घड़ी आती है। संसार में परिचितों की कमी नहीं होती। हँसी-ठट्ठे के साथी, उत्सवों में कंधे से कंधा मिलाने वाले और सुख के दिनों में द्वार पर भीड़ लगाने वाले बहुत मिल जाते हैं। पर इनमें से कितने ऐसे हैं जो विपत्ति की अँधेरी रात में दीपक बनकर साथ खड़े रहें? सच्चा मित्र वही है जो हमारी प्रशंसा का ढोल नहीं पीटता, बल्कि भूल होने पर निःसंकोच टोक देता है और गिरने पर हाथ थाम लेता है। चाटुकार मीठे वचनों से मन को बहलाता है, पर भीतर-ही-भीतर हमारे विवेक को कुंद कर देता है; मित्र कड़वी बात कहकर भी हमें सही राह पर ले आता है। युवावस्था में मनुष्य प्रायः बाहरी चमक-दमक पर रीझकर मित्र चुन लेता है। किंतु मित्रता की असली परख आचरण से होती है, वचन से नहीं। जिसका चरित्र दृढ़ है, जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरे को सीढ़ी नहीं बनाता और जो हमारी उन्नति पर सचमुच प्रसन्न होता है, वही मित्र कहलाने योग्य है। ऐसा एक मित्र भी मिल जाए तो जीवन का बोझ आधा और आनंद दूना हो जाता है। मित्र चुनते समय उतावली नहीं, धैर्य और विवेक चाहिए, क्योंकि मनुष्य का स्वभाव धीरे-धीरे अपनी संगति के साँचे में ही ढलता जाता है।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे जीवन में चुपचाप उतर आई है। मोबाइल पर बोलकर संदेश लिखना, अनजानी भाषा का पल भर में अनुवाद, बीमारी की जाँच में मदद और खेतों के लिए मौसम का पूर्वानुमान — ये सब उसी की देन हैं। जो काम कभी घंटों में होते थे, वे अब पलक झपकते हो जाते हैं। स्वाभाविक है कि लोग इसे किसी जादुई चिराग़ की तरह देखने लगे हैं। पर इस चमक के साथ कई आशंकाएँ भी जुड़ी हैं। बहुत-से लोगों को डर है कि मशीनें उनकी नौकरियाँ छीन लेंगी। झूठी तस्वीरें और नकली

आवाज़ें बनाकर लोगों को ठगने की घटनाएँ भी बढ़ रही हैं। यही नहीं, जब हर छोटा-बड़ा निर्णय मशीन पर छोड़ दिया जाता है, तो मनुष्य की अपनी सोचने की आदत धीरे-धीरे मंद पड़ने लगती है। **दरअसल मशीन की समझ उतनी ही होती है, जितनी उसे सिखाने वाले मनुष्य की; उसमें ज्ञान तो भरा जा सकता है, पर विवेक और करुणा नहीं।** इसलिए असली प्रश्न यह नहीं है कि मशीन कितनी शक्तिशाली होगी, बल्कि यह है कि हम उसका उपयोग किस दिशा में करेंगे। अब तक हर नई तकनीक ने जहाँ कुछ पुराने काम छीने, वहीं कई नए रास्ते भी खोले। शर्त केवल इतनी है कि समाज समय रहते नए कौशल सीखे और कड़े नियम बनाकर इसके दुरुपयोग पर रोक लगाए। **मनुष्य का भविष्य मशीन के हाथ में नहीं, मशीन को दिशा देने वाले मनुष्य के हाथ में है।**

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) लेखक के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी प्रमुख आशंकाएँ क्या हैं?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

Durga Puja is the greatest festival of Kolkata. Every autumn the city is transformed for five days. Countless pandals spring up in parks and on street corners; some are built like temples and palaces, while others are shaped around bold artistic themes. Inside each stands the image of Goddess Durga slaying the demon Mahishasura, with Lakshmi, Saraswati, Ganesha and Kartikeya beside her. The beat of the dhak fills the air, and crowds move from pandal to pandal late into the night. On the last day, Vijaya Dashami, married women smear one another with vermilion, and the images are carried in processions to the Hooghly to be immersed. In 2021, UNESCO added Durga Puja in Kolkata to its list of the Intangible Cultural Heritage of Humanity.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) प्लास्टिक थैलियों पर प्रतिबंध का ढीला पालन

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: प्लास्टिक थैलियों पर लगे प्रतिबंध के ढीले पालन के संबंध में।

महोदय,

पतली प्लास्टिक थैलियों पर प्रतिबंध लगे काफ़ी समय हो चुका है, पर हमारे मोहल्ले का बाज़ार देखकर कोई नहीं कह सकता कि ऐसा कोई नियम भी है। सब्ज़ी, मछली और किराने का सामान खुलेआम इन्हीं थैलियों में दिया जा रहा है। दुकानदार कहते हैं कि ग्राहक माँगते हैं और ग्राहक कहते हैं कि दुकानदार देते हैं। इसका ख़मियाज़ा पूरा मोहल्ला भुगत रहा है: नालियाँ थैलियों से अटी पड़ी हैं, थोड़ी-सी बारिश में ही सड़कों पर पानी भर जाता है और कूड़े के ढेरों पर आवारा पशु इन्हें निगल रहे हैं।

नियम बना देना काफ़ी नहीं, उसका पालन करवाना भी उतना ही ज़रूरी है। आपके पत्र के माध्यम से मेरा नगर निगम से अनुरोध है कि वह नियमित जाँच करे, थोक विक्रेताओं पर सख़्ती बरते और कपड़े या जूट के थैलों को सस्ता तथा सुलभ बनाए। नागरिकों को भी घर से थैला लेकर निकलने की आदत डालनी होगी।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

दोनों पक्षों (दुकानदार और ग्राहक) की बात रखने से पत्र एकतरफ़ा शिकायत नहीं लगता। समस्या, दुष्परिणाम और सुझाव का क्रम बना रहे।

(ख) विद्यालयों में खेल के मैदानों की कमी

सेवा में,

संपादक महोदय,

प्रभात ख़बर,

कोलकाता।

विषय: विद्यालयों में खेल के मैदानों की कमी के संबंध में।

महोदय,

मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार पत्र के माध्यम से शहर के विद्यालयों में खेल के मैदानों की घटती संख्या पर चिंता प्रकट करना चाहता हूँ। अनेक विद्यालय अब दो-तीन मंज़िला इमारतों में सिमट गए हैं, जहाँ बच्चों के दौड़ने-भागने के लिए आँगन तक नहीं बचा। कुछ ने तो कक्षाएँ बढ़ाने के लिए अपने ही मैदान पर नए कमरे बनवा लिए। समय-सारणी में खेल का नाम भर रह गया है।

इसका असर बच्चों के स्वास्थ्य पर साफ़ दिख रहा है। वे मोबाइल और टेलीविज़न से चिपके रहते हैं, उनमें मोटापा बढ़ रहा है और मिल-जुलकर खेलने से जो अनुशासन और सहयोग सहज ही आ जाता है, उससे भी वे वंचित हो रहे हैं। शिक्षा विभाग को चाहिए कि नए विद्यालयों को मान्यता देने के लिए खेल के मैदान को अनिवार्य शर्त बनाए और जहाँ जगह नहीं है, वहाँ आसपास के सार्वजनिक मैदान तय समय पर विद्यालयों को उपलब्ध कराए।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

सुझाव ऐसे हों जिन्हें सचमुच लागू किया जा सके, जैसे मान्यता की शर्त; हवाई माँगों से अंक नहीं बढ़ते।

(ग) गाँवों के स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टरों की कमी

सेवा में,

निदेशक, स्वास्थ्य सेवाएँ,

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग,

पश्चिम बंगाल सरकार,

स्वास्थ्य भवन, कोलकाता।

विषय: ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टरों की कमी दूर करने हेतु निवेदन।

महोदय,

मैं XYZ गाँव का निवासी हूँ और आपका ध्यान हमारे क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की दयनीय स्थिति की ओर दिलाना चाहता हूँ। आसपास के दस-बारह गाँवों के हज़ारों लोग इसी केंद्र पर निर्भर हैं, पर पिछले कई महीनों से यहाँ केवल एक डॉक्टर तैनात हैं, जो सप्ताह में दो-तीन दिन ही आ पाते हैं। बाक़ी दिन मरीज़ों को फ़ार्मासिस्ट से दवा लेकर ही लौटना पड़ता है।

सबसे अधिक परेशानी गर्भवती महिलाओं, बच्चों और बुज़ुर्गों को होती है। रात में कोई आपात स्थिति आ जाए तो लोगों को तीस किलोमीटर दूर ज़िला अस्पताल भागना पड़ता है, जहाँ पहुँचने में कई बार बहुत देर हो जाती है। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि इस केंद्र में कम-से-कम दो स्थायी डॉक्टरों की नियुक्ति की जाए, उनके रहने की उचित व्यवस्था हो और रात्रि सेवा भी शुरू की जाए।

आशा है, आप इस विषय पर शीघ्र कार्रवाई करेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

सरकारी विभाग को लिखा पत्र औपचारिक होता है: "सेवा में" के बाद पदनाम, विभाग और पता लिखें तथा अंत में स्पष्ट माँग रखें।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

नशे की गिरफ़्त में युवा पीढ़ी, समाज के लिए ख़तरे की घंटी

कोलकाता, 22 अक्टूबर (निज संवाददाता)। शहर और आसपास के इलाक़ों में युवाओं में नशे का चलन तेज़ी से बढ़ रहा है। स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थी हों या बेरोज़गार नौजवान, सिगरेट और शराब से शुरू हुई यह लत अब नशीली गोलियों और सूँघे जाने वाले रसायनों से आगे कहीं घातक नशे तक जा पहुँची है। नशा-मुक्ति केंद्रों के कार्यकर्ता बताते हैं कि उनके यहाँ आने वाले किशोरों की संख्या पहले से कहीं अधिक है।

जानकारों के अनुसार पढ़ाई और नौकरी की होड़ का दबाव, परिवार में संवाद की कमी, बुरी संगत और फ़िल्मों तथा सोशल मीडिया पर नशे का चमकीला रूप युवाओं को इस ओर खींच रहे हैं। कई अभिभावकों को बच्चे की लत का पता तब चला, जब वह पढ़ाई छोड़ चुका था।

चिकित्सक चेताते हैं कि नशा शरीर को ही नहीं, मन और भविष्य को भी खोखला कर देता है। इससे अपराध, सड़क दुर्घटनाएँ और पारिवारिक कलह भी बढ़ते हैं।

समाजसेवियों ने माँग की है कि विद्यालयों में नियमित परामर्श की व्यवस्था हो, नशीले पदार्थों की बिक्री पर पुलिस कड़ी नज़र रखे और सस्ते उपचार केंद्र खोले जाएँ। उनका कहना है कि परिवार और समाज ने यह चेतावनी समय रहते नहीं सुनी, तो एक पूरी पीढ़ी इसकी क़ीमत चुकाएगी।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> शीर्षक और दिनांक-पंक्ति के बाद कारण, दुष्परिणाम और सुझाव का क्रम रखें। हर बात किसके हवाले से है (चिकित्सक, समाजसेवी), यह बताते चलें; इससे प्रतिवेदन निजी टिप्पणी नहीं, समाचार लगता है।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: सच्चे मित्र की पहचान

संसार में सुख के साथी तो बहुत मिलते हैं, पर सच्चा मित्र वही है जो संकट में साथ दे, भूल पर टोके और गिरने पर सहारा दे। चाटुकार मीठी बातों से विवेक को कुंद करता है, जबकि मित्र कड़वा सच कहकर भी सही राह दिखाता है। मित्र की परख बाहरी आकर्षण से नहीं, उसके चरित्र और निःस्वार्थ आचरण से होती है। मित्र का चुनाव धैर्य और विवेक से करना चाहिए, क्योंकि संगति ही स्वभाव गढ़ती है।

(मूल गद्यांश: 212 शब्द; सार: 76 शब्द)

> **परीक्षा-संकेत**
>
> सार अन्य पुरुष में लिखें; मूल के "हम", "हमारी" और "दीपक", "ढोल" जैसे भावुक प्रयोग छोड़कर केवल विचार रखें।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

"कृत्रिम बुद्धिमत्ता: वरदान या चुनौती" — यह शीर्षक उपयुक्त है, क्योंकि गद्यांश में एक ओर कृत्रिम बुद्धिमत्ता से मिलने वाली सुविधाओं, जैसे अनुवाद, रोगों की जाँच और मौसम के पूर्वानुमान की चर्चा है, तो दूसरी ओर नौकरियों के छिनने, धोखाधड़ी और सोचने की आदत के कमज़ोर पड़ने जैसी आशंकाओं की भी। अंत में लेखक यह निष्कर्ष निकालता है कि यह तकनीक वरदान बनेगी या संकट, यह मनुष्य के उपयोग पर निर्भर है। "मशीन और मनुष्य का भविष्य" भी एक उपयुक्त शीर्षक हो सकता है।

(ख) कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी प्रमुख आशंकाएँ

लेखक ने तीन प्रमुख आशंकाओं की ओर संकेत किया है। पहली, बहुत-से लोगों को डर है कि मशीनें उनका रोज़गार छीन लेंगी। दूसरी, इस तकनीक की मदद से झूठी तस्वीरें और नकली आवाज़ें बनाकर लोगों को ठगा जा रहा है, जिससे धोखाधड़ी बढ़ी है। तीसरी और सबसे गहरी आशंका यह है कि जब हर निर्णय मशीन पर छोड़ दिया जाता है, तो मनुष्य की अपनी सोचने-समझने की आदत धीरे-धीरे मंद पड़ने लगती है। लेखक की दृष्टि में ये ख़तरे तकनीक से कम, उसके दुरुपयोग और उस पर हमारी आँख मूँदकर बढ़ती निर्भरता से अधिक पैदा होते हैं।

(ग) रेखांकित पंक्तियों का आशय

पहली पंक्ति का आशय यह है कि मशीन की अपनी कोई स्वतंत्र समझ नहीं होती। वह उतना ही जानती है जितना मनुष्य उसे आँकड़ों और निर्देशों के रूप में सिखाता है। उसमें जानकारी का भंडार भरा जा सकता है, पर सही-ग़लत का भेद करने वाला विवेक और दूसरों का दुख समझने वाली करुणा मनुष्य के ही गुण हैं।

दूसरी पंक्ति इसी बात को आगे बढ़ाती है। मनुष्य का भाग्य मशीन तय नहीं करेगी; मशीन किस काम में लगे, यह मनुष्य तय करता है। यदि हम उसका उपयोग लोक-कल्याण के लिए करें और दुरुपयोग पर रोक लगाएँ, तो भविष्य उज्ज्वल होगा। ज़िम्मेदारी मशीन की नहीं, हमारी है।

(घ) सारांश

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने अनुवाद, चिकित्सा और खेती जैसे क्षेत्रों में काम आसान और तेज़ कर दिया है, पर इसके साथ रोज़गार छिनने, धोखाधड़ी और मनुष्य के चिंतन के कमज़ोर पड़ने का ख़तरा भी है। मशीन में ज्ञान है, विवेक और करुणा नहीं। इसलिए नए कौशल सीखकर और कड़े नियम बनाकर ही इसका सही उपयोग संभव है। सच तो यह है कि भविष्य मशीन नहीं, बल्कि उसे सही दिशा देने वाला मनुष्य ही तय करेगा।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> चारों भागों के उत्तर क्रम से और अलग-अलग लिखें। शीर्षक के साथ एक-दो पंक्ति का औचित्य देने से पूरे अंक मिलते हैं।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

दुर्गा पूजा कोलकाता का सबसे बड़ा त्योहार है। हर साल शरद ऋतु में पाँच दिनों के लिए पूरे शहर का रूप ही बदल जाता है। पार्कों में और गलियों के नुक्कड़ों पर अनगिनत पंडाल खड़े हो जाते हैं। इनमें से कुछ मंदिरों और महलों जैसे बनाए जाते हैं, तो कुछ किसी नए, साहसिक कलात्मक विचार को लेकर गढ़े जाते हैं। हर पंडाल में महिषासुर का वध करती माँ दुर्गा की प्रतिमा विराजती है, जिनके साथ लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश और कार्तिकेय भी होते हैं। हवा में ढाक की थाप गूँजती रहती है और देर रात तक लोगों के रेले एक पंडाल से दूसरे पंडाल तक घूमते रहते हैं। अंतिम दिन, विजयादशमी को, सुहागिनें एक-दूसरे को सिंदूर लगाती हैं; फिर प्रतिमाएँ शोभायात्राओं में

हुगली तक ले जाई जाती हैं और वहाँ उनका विसर्जन होता है। सन् 2021 में यूनेस्को ने कोलकाता की दुर्गा पूजा को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में शामिल किया।

परीक्षा-संकेत

"शहर बदल जाता है" को "पूरे शहर का रूप ही बदल जाता है" लिखा, जो हिंदी में अधिक स्वाभाविक है। "बोल्ड आर्टिस्टिक थीम्स" के लिए "विषय-वस्तु" जैसा भारी शब्द न लेकर "नए, साहसिक कलात्मक विचार" लिखा, और "क्राउड्स मूव" को "लोगों के रेले घूमते रहते हैं" से व्यक्त किया। "सिंदूर खेला" का भाव "एक-दूसरे को सिंदूर लगाना" से स्पष्ट किया गया है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र 4

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें):

(क) शहर के बस-अड्डों पर यात्री-सुविधाओं के अभाव की ओर ध्यान दिलाते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र।

(ख) शादी-ब्याह में होने वाली भोजन की बर्बादी पर चिंता प्रकट करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र।

(ग) अपने मोहल्ले की ख़राब स्ट्रीट लाइटों की शिकायत करते हुए कोलकाता नगर निगम के आयुक्त को पत्र (सरकारी कार्यालय को पत्र)।

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

कोलकाता में पुरानी, जर्जर इमारतों का बढ़ता ख़तरा

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

मनुष्य की इच्छाएँ आकाश की तरह अनंत हैं। एक इच्छा पूरी होती है तो उसके पीछे दूसरी आ खड़ी होती है, और दूसरी के पीछे तीसरी। जो व्यक्ति इन इच्छाओं के पीछे आँख मूँदकर दौड़ता है, वह जीवन-भर दौड़ता ही रहता है; उसे कहीं ठहरने का अवसर नहीं मिलता। यही दौड़ लोभ है। लोभी के पास कितना भी धन क्यों न हो, उसकी दृष्टि सदा उस पर टिकी रहती है जो उसके पास नहीं है। इसीलिए वह भरे भंडार के बीच भी दरिद्र बना रहता है। लोभ धीरे-धीरे उसके विवेक को ढक लेता है; वह संबंधों को भी लाभ-हानि के तराज़ू पर तौलने लगता है और अंत में अकेला रह जाता है।

संतोष इसके ठीक विपरीत है। संतोष का अर्थ आलस्य या निष्क्रियता नहीं है, जैसा कुछ लोग समझ बैठते हैं। संतोषी मनुष्य भी परिश्रम करता है, उन्नति की कामना करता है, पर परिश्रम के फल को प्रसन्न मन से स्वीकार करता है। वह दूसरों की समृद्धि देखकर जलता नहीं और अपनी कमी पर रोता नहीं। उसका मन शांत सरोवर की तरह होता है, जिसमें जीवन का सौंदर्य साफ़ झलकता है। हमारे पूर्वजों ने संतोष को परम धन इसलिए कहा कि जिसके पास यह धन है, उसे संसार का कोई अभाव निर्धन नहीं बना सकता। सच्चा सुख वस्तुओं के संग्रह में नहीं, मन की तृप्ति में है।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

भारतीय संस्कृति में वृक्षों को केवल वनस्पति नहीं, जीवित देवता माना गया है। पीपल की पूजा, तुलसी का चौरा और वट-सावित्री का व्रत इसी आस्था के प्रतीक हैं। हमारे पूर्वज भले ही आज की तरह विज्ञान की भाषा न बोलते हों, पर वे जानते थे कि

मनुष्य का अस्तित्व वृक्षों से अलग नहीं है। वृक्ष हमें प्राणवायु देते हैं, धूप में छाया देते हैं, भूख में फल और रोग में औषधि। उनकी जड़ें मिट्टी को बाँधे रखती हैं, जिससे बाढ़ और भू-क्षरण पर अंकुश लगता है, और उनकी हरियाली वर्षा को बुलाती है। पक्षियों के घोंसले से लेकर किसान की चारपाई तक, जीवन के हर पड़ाव पर वृक्ष किसी न किसी रूप में हमारे साथ रहते हैं।

विडंबना यह है कि जिस वृक्ष ने हमें इतना कुछ दिया, उसी पर आज सबसे पहले कुल्हाड़ी चलती है। सड़कें चौड़ी करनी हों, नई बस्ती बसानी हो या कारख़ाना लगाना हो, सबसे सस्ता उपाय पेड़ काटना ही समझा जाता है। इसका परिणाम हम बढ़ती गर्मी, गिरते भू-जल और ज़हरीली होती हवा के रूप में भुगत रहे हैं। **वृक्ष काटते समय हम भूल जाते हैं कि हम अपनी ही साँसों की डोर काट रहे हैं।** विकास आवश्यक है, किंतु वह विकास अधूरा है जो धरती को बंजर बनाकर आगे बढ़े। यदि हर व्यक्ति अपने जीवन में कुछ पेड़ लगाने और उन्हें बड़ा करने का संकल्प ले, तो हम आने वाली पीढ़ियों को एक हरी-भरी और साँस लेने योग्य धरती सौंप सकते हैं।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) हमारे पूर्वज वृक्षों को देवता क्यों मानते थे? लेखक के अनुसार वृक्ष मानव-जीवन में कौन-कौन-सी भूमिकाएँ निभाते हैं?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

Ishwar Chandra Vidyasagar, one of the great reformers of nineteenth-century Bengal, was born in 1820 into a poor family in the village of Birsingha. Many stories are told about his childhood hunger for learning. It is said that his family could not always afford oil for a lamp, so the boy would sit under a street lamp at night and read his lessons by its dim light. Another well-known story tells of his journey on foot to Calcutta with his father. On the way, the boy noticed the milestones by the roadside and, by reading the numbers on them, learned the English numerals before he reached the city. Whether or not every detail is true, these stories remind us that poverty cannot stop a mind that truly wants to learn.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) बस-अड्डों पर यात्री-सुविधाओं का अभाव

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: बस-अड्डों पर यात्री-सुविधाओं के अभाव के संबंध में।

महोदय,

पिछले सप्ताह की एक दोपहर धर्मतल्ला बस-अड्डे पर मैंने एक बुज़ुर्ग महिला को चिलचिलाती धूप में लगभग घंटे-भर अपनी बस की राह देखते पाया। बैठने के लिए न कोई बेंच थी, न सिर पर छाया। शहर के अधिकांश बस-अड्डों पर पीने का साफ़ पानी नहीं मिलता और शौचालय या तो हैं ही नहीं या इतने गंदे हैं कि उनका उपयोग असंभव है। रात होते ही कई अड्डे अँधेरे में डूब जाते हैं, जिससे यात्रियों, विशेषकर महिलाओं, में असुरक्षा की भावना बढ़ती है। कौन-सी बस कब आएगी, यह बताने वाली कोई पट्टिका भी नहीं है, इसलिए लोग अंदाज़े के भरोसे खड़े रहते हैं।

आपके लोकप्रिय पत्र के माध्यम से मैं परिवहन विभाग से अनुरोध करता हूँ कि हर बड़े बस-अड्डे पर छायादार प्रतीक्षालय, पेयजल, स्वच्छ शौचालय, पर्याप्त रोशनी और समय-सारणी की व्यवस्था शीघ्र की जाए। ये सुविधाएँ कोई विलासिता नहीं, यात्रियों का अधिकार हैं।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 20 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

संपादक को लिखे पत्र में एक छोटा, आँखों देखा दृश्य समस्या को जीवंत बना देता है; अंत में सुझाव गिनाकर लिखें ताकि पत्र केवल शिकायत बनकर न रह जाए।

(ख) शादी-ब्याह में भोजन की बर्बादी

सेवा में,
संपादक महोदय,
प्रभात ख़बर,
कोलकाता।

विषय: शादी-ब्याह में होने वाली भोजन की बर्बादी पर चिंता।

महोदय,

क्या कभी सोचा है कि एक शादी की दावत के बाद जितना खाना कूड़े में फेंका जाता है, उससे कितने भूखों का पेट भर सकता है? एक संबंधी के विवाह में मैंने देखा कि दर्जनों व्यंजनों वाले भोज में मेहमान थालियाँ भर-भरकर लेते और आधा खाना छोड़कर उठ जाते। बचा हुआ भोजन ड्रमों में भरकर फेंक दिया गया, जबकि उसी पंडाल के बाहर कुछ बच्चे जूठन की आस में खड़े थे।

यह दृश्य हमारे समाज की दिखावे वाली मानसिकता का आईना है। आवश्यक है कि मेहमानों की सही संख्या का अनुमान लगाकर ही भोजन बनवाया जाए, व्यंजन सीमित रखे जाएँ और थाली में उतना ही परोसा जाए जितना खाया जा सके। बचा भोजन फेंकने के बजाय स्वयंसेवी संस्थाओं के ज़रिये ज़रूरतमंदों तक पहुँचाया जा सकता है।

आशा है, आपका समाचार-पत्र इस विषय पर लोगों को जगाएगा। अन्न का अनादर अंततः मनुष्य का ही अनादर है।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 20 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

प्रश्नवाचक वाक्य से शुरुआत पाठक को तुरंत बाँध लेती है; सामाजिक विषय पर पत्र लिखते समय किसी व्यक्ति या वर्ग पर दोष मढ़ने के बजाय व्यावहारिक उपाय सुझाएँ।

(ग) मोहल्ले की ख़राब स्ट्रीट लाइटें

सेवा में,
आयुक्त महोदय,
कोलकाता नगर निगम,
कोलकाता।

विषय: XYZ मोहल्ले की ख़राब स्ट्रीट लाइटों की मरम्मत हेतु।

महोदय,

पिछले लगभग दो महीनों से वार्ड संख्या XYZ के XYZ मोहल्ले की मुख्य सड़क और उससे जुड़ी गलियाँ शाम ढलते ही अँधेरे में डूब जाती हैं, क्योंकि यहाँ की अधिकांश स्ट्रीट लाइटें ख़राब पड़ी हैं। अँधेरे के कारण स्कूल-कॉलेज से लौटने वाली छात्राएँ और देर रात काम से लौटने वाले लोग भय के साये में घर पहुँचते हैं। इस बीच मोहल्ले में झपटमारी की दो घटनाएँ हो चुकी हैं और सड़क का गड्ढा न दिखने से एक बुज़ुर्ग गिरकर घायल भी हो गए। कुछ खंभों के तार खुले लटक रहे हैं, जो बरसात में किसी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकते हैं। निवासियों ने वार्ड कार्यालय में कई बार शिकायत की, पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि ख़राब बत्तियों को तुरंत बदलवाने, खुले तारों को ठीक कराने और भविष्य में नियमित रख-रखाव की व्यवस्था करने का आदेश देने की कृपा करें।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
(मोहल्ला-निवासियों की ओर से)
पता: XYZ
दिनांक: 20 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

सरकारी पत्र में विषय-पंक्ति स्पष्ट और छोटी रखें, समस्या की अवधि और पहले की गई शिकायतों का उल्लेख करें, और अंत में "आदेश देने की कृपा करें" जैसा औपचारिक निवेदन अवश्य लिखें।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

जर्जर इमारतों के साये में जी रहा महानगर

कोलकाता, 21 अक्टूबर 2026 (निज संवाददाता)। उत्तर और मध्य कोलकाता की तंग गलियों में खड़ी सौ-सौ बरस पुरानी इमारतें अब शहर की विरासत कम और ख़तरा अधिक बनती जा रही हैं। इस मानसून में भी कई इलाक़ों से छज्जे, बरामदे और दीवारें ढहने की ख़बरें आईं। कुछ लोग घायल हुए और कई परिवारों को रातोंरात घर छोड़ना पड़ा।

नगर निगम ऐसी अनेक इमारतों को ख़तरनाक घोषित कर चुका है, फिर भी अधिकांश में लोग रह रहे हैं। इसकी जड़ में मकान-मालिक और किरायेदार का पुराना विवाद है। बरसों से बहुत कम किराया देने वाले किरायेदार घर ख़ाली करने से डरते हैं कि कहीं लौटने का अधिकार न छिन जाए। दूसरी ओर, नाममात्र की आमदनी के कारण मालिक मरम्मत पर ख़र्च करने से कतराते हैं।

बागबाज़ार की एक पुरानी इमारत में रहने वाले एक बुज़ुर्ग ने कहा, "बारिश की हर रात हम जागकर काटते हैं। पर जाएँ भी तो कहाँ?"

विशेषज्ञ मानते हैं कि केवल नोटिस चिपकाने से काम नहीं चलेगा। इमारतों का नियमित संरचनात्मक सर्वेक्षण, निवासियों के लिए अस्थायी पुनर्वास और मरम्मत के बाद उसी घर में लौटने की क़ानूनी गारंटी, इन तीनों के बिना यह समस्या नहीं सुलझेगी। इसके लिए प्रशासन, मालिकों और किरायेदारों को एक मेज़ पर आना होगा।

परीक्षा-संकेत

प्रतिवेदन में समस्या, उसका कारण, प्रभावित लोगों की आवाज़ और समाधान, यह क्रम अंक दिलाता है; किसी निवासी का एक छोटा-सा कथन रिपोर्ट को विश्वसनीय बनाता है, पर मनगढ़ंत आँकड़े न दें।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: संतोष ही सच्चा धन

मनुष्य की इच्छाएँ अनंत हैं और उनके पीछे अंधी दौड़ ही लोभ है। लोभी सदा अप्राप्त को ताकता है, इसलिए धनी होकर भी दरिद्र रहता है; उसका विवेक नष्ट होता है और वह अकेला पड़ जाता है। संतोष निष्क्रियता नहीं है। संतोषी परिश्रम करता है, पर उसके फल को प्रसन्नता से स्वीकारता है और ईर्ष्या या हीनता से मुक्त रहता है। इसीलिए संतोष परम धन है, क्योंकि सच्चा सुख मन की तृप्ति में है।

(मूल गद्यांश: 217 शब्द; सार: 74 शब्द)

परीक्षा-संकेत

सार में मूल के उदाहरण और उपमाएँ (आकाश, सरोवर) छोड़ दें, केवल विचार रखें; "संतोष आलस्य नहीं है" जैसी बात, जो किसी भ्रम का खंडन करती है, सार में अवश्य आनी चाहिए।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

शीर्षक: वृक्ष: मानव-जीवन के मौन साथी

यह शीर्षक इसलिए ठीक बैठता है कि पूरे गद्यांश का केंद्र यही विचार है कि वृक्ष बिना कुछ माँगे जन्म से लेकर अंत तक मनुष्य का साथ निभाते हैं। पहले अनुच्छेद में लेखक वृक्षों के उपकार गिनाता है, जैसे प्राणवायु, छाया, फल, औषधि और मिट्टी की रक्षा। दूसरे अनुच्छेद में वह दिखाता है कि इन्हीं साथियों को हम विकास के नाम पर काट रहे हैं, और अंत में उन्हें बचाने तथा नए पेड़ लगाने का संकल्प लेने को कहता है। "मौन साथी" शब्द वृक्षों की निःस्वार्थ सेवा और हमारी उपेक्षा, दोनों की ओर संकेत करता है।

परीक्षा-संकेत

"मौन साथी" जैसा भावपूर्ण शीर्षक तभी अंक दिलाता है जब नीचे दिखाया जाए कि वह उपकार और विनाश, दोनों अनुच्छेदों पर लागू होता है।

(ख) पूर्वजों की आस्था और वृक्षों की भूमिका

लेखक के अनुसार हमारे पूर्वज भले ही आधुनिक विज्ञान की भाषा न जानते हों, पर वे अनुभव से समझ चुके थे कि मनुष्य का अस्तित्व वृक्षों पर टिका है। इसी समझ ने आस्था का रूप लिया और पीपल की पूजा, तुलसी का चौरा तथा वट-सावित्री जैसे व्रत हमारी संस्कृति का अंग बन गए। वृक्ष मानव-जीवन में अनेक भूमिकाएँ निभाते हैं। वे प्राणवायु देते हैं, धूप में छाया, भूख में फल और रोग में औषधि देते हैं। उनकी जड़ें मिट्टी को बाँधकर बाढ़ और भू-क्षरण रोकती हैं और हरियाली वर्षा लाती है। पक्षियों के घोंसले से लेकर किसान की चारपाई तक, जीवन के हर पड़ाव पर वे किसी न किसी रूप में हमारे साथ रहते हैं।

परीक्षा-संकेत

दो हिस्सों वाले प्रश्न में दोनों का उत्तर अलग-अलग क्रम से दें: पहले "क्यों", फिर "कौन-सी भूमिकाएँ"; गद्यांश के उदाहरण अपने शब्दों में गिनाएँ।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

"वृक्ष काटते समय हम भूल जाते हैं कि हम अपनी ही साँसों की डोर काट रहे हैं।" इस पंक्ति में लेखक ने एक मार्मिक रूपक के सहारे वृक्ष और मनुष्य के अटूट संबंध को व्यक्त किया है। जिस प्राणवायु के बिना हम जी नहीं सकते, वह वृक्षों से ही मिलती है। इसलिए पेड़ काटना केवल लकड़ी काटना नहीं, अपने ही जीवन की डोर को कमज़ोर करना है। आशय यह है कि सड़क, बस्ती या कारख़ाने के लिए पेड़ काटते समय हम तात्कालिक लाभ तो देखते हैं, पर यह नहीं देखते कि बढ़ती गर्मी, गिरता भू-जल और दूषित हवा अंततः हमारे ही अस्तित्व को संकट में डाल देंगे। यह पंक्ति मनुष्य की अदूरदर्शिता पर गहरी चोट करती है।

परीक्षा-संकेत

आशय लिखते समय पहले पंक्ति उद्धृत करें, फिर उसके रूपक ("साँसों की डोर") को खोलें और गद्यांश के संदर्भ से जोड़ें; केवल पंक्ति को दूसरे शब्दों में दोहराने से पूरे अंक नहीं मिलते।

(घ) सारांश

भारतीय संस्कृति में वृक्षों को देवता माना गया है, क्योंकि हमारे पूर्वज समझते थे कि मानव-जीवन उन्हीं पर टिका है। वृक्ष प्राणवायु, छाया, फल और औषधि देते हैं, मिट्टी को बाँधते हैं और वर्षा लाते हैं। फिर भी विकास के नाम पर सबसे पहले उन्हीं को काटा जाता है, जिसका दंड हम गर्मी, घटते भू-जल और प्रदूषित हवा के रूप में भुगत रहे हैं। पेड़ काटना अपने ही जीवन को संकट में डालना है। यदि हर व्यक्ति पेड़ लगाने और उन्हें पालने का संकल्प ले, तो भावी पीढ़ियों को हरी-भरी धरती मिल सकती है।

परीक्षा-संकेत

सारांश में गद्यांश का क्रम बनाए रखें: आस्था, उपकार, विनाश, परिणाम और समाधान; उदाहरणों की लंबी सूची से बचें और मूल का लगभग एक-तिहाई ही लिखें।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

ईश्वरचंद्र विद्यासागर उन्नीसवीं सदी के बंगाल के महान समाज-सुधारकों में से एक थे। उनका जन्म 1820 में बीरसिंह गाँव के एक निर्धन परिवार में हुआ था। बचपन में पढ़ाई के प्रति उनकी ललक को लेकर अनेक क़िस्से सुनाए जाते हैं। कहा जाता है कि घर में दीये के लिए तेल भी हमेशा नहीं जुट पाता था, इसलिए बालक ईश्वरचंद्र रात में सड़क की बत्ती के नीचे बैठकर उसकी मद्धम रोशनी में अपना पाठ पढ़ा करते थे। एक और प्रसिद्ध क़िस्सा पिता के साथ उनकी पैदल कलकत्ता-यात्रा का है। रास्ते में बालक की नज़र सड़क किनारे लगे मील के पत्थरों पर पड़ी और उन पर लिखी संख्याएँ पढ़ते-पढ़ते उन्होंने शहर पहुँचने से पहले ही अंग्रेज़ी के अंक सीख लिए। इन क़िस्सों का हर ब्योरा सच हो या न हो, ये हमें याद दिलाते हैं कि जो मन सचमुच सीखना चाहता है, उसे ग़रीबी नहीं रोक सकती।

परीक्षा-संकेत

मूल के "भूख" वाले मुहावरे को शब्दशः न लेकर "पढ़ाई के प्रति ललक" लिखा गया है; "कुड नॉट ऑलवेज़ अफ़ोर्ड" को "तेल भी हमेशा नहीं जुट पाता था" लिखा गया है, जो "ख़र्च वहन न कर पाना" से कहीं सहज है; और अंतिम वाक्य की शर्त को "हर ब्योरा सच हो या न हो" जैसे बोलचाल के ढंग से रखा गया है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र 5

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

किसी एक विषय पर पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें):

(क) परीक्षाओं में बढ़ती नक़ल की प्रवृत्ति पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ख) शहर के फ़ुटपाथों पर बढ़ते अतिक्रमण से पैदल चलने वालों को हो रही कठिनाइयों की ओर ध्यान दिलाते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ग) (सरकारी कार्यालय को पत्र) वरिष्ठ नागरिकों की पेंशन में हो रही देरी की शिकायत करते हुए निदेशक, पेंशन, भविष्य निधि एवं समूह बीमा निदेशालय, पश्चिम बंगाल को पत्र लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

स्वयं सहायता समूहों से बदलती ग्रामीण बंगाल की महिलाएँ

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

विनम्रता मनुष्य के चरित्र का वह आभूषण है जो बिना चमके भी सबसे अधिक शोभा देता है। प्रायः लोग समझते हैं कि विनम्र होना दुर्बल होना है, कि जो झुकता है वह हारता है। सच यह है कि झुकने का साहस वही कर पाता है जिसकी जड़ें गहरी होती हैं। फलों से लदी डाल ही नीचे झुकती है; सूखी टहनी अकड़ी खड़ी रहती है और पहली आँधी में टूट जाती है। ज्ञान का भी यही स्वभाव है। जितना अधिक कोई जानता है, उतना ही उसे अपने अज्ञान का बोध होता है, और यही बोध उसे विनम्र बनाता है। अधूरा ज्ञान ही शोर मचाता है, जैसे अधजल गगरी छलकती है।

विनम्रता का अर्थ अपने को हीन मानना नहीं है, न ही हर बात पर सिर हिला देना। विनम्र व्यक्ति अपनी बात दृढ़ता से कहता है, पर दूसरे की बात सुनने का धैर्य भी रखता है। वह जानता है कि सत्य किसी एक की बपौती नहीं। अहंकार मनुष्य को अपने ही घेरे में बंद कर देता है; वह सीखना छोड़ देता है, क्योंकि उसे लगता है कि सीखने को कुछ बचा ही नहीं। विनम्रता उस घेरे के द्वार खोलती है। इसीलिए जिन महापुरुषों के आगे संसार नतमस्तक हुआ, वे स्वयं सबसे अधिक सरल और सहज थे। जो दूसरों के आगे झुकना जानता है, उसके आगे समय भी झुकता है।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

लोकतंत्र की इमारत संसद-भवन की ऊँची दीवारों पर नहीं, उस साधारण मतदाता के विवेक पर टिकी होती है जो कुछ वर्षों में एक बार मतदान-केंद्र की कतार में खड़ा होता है। उस क्षण खेत में पसीना बहाने वाला किसान और आलीशान कोठी में रहने

वाला उद्योगपति बराबर होते हैं; दोनों के हाथ में एक ही मत होता है और दोनों का मूल्य भी एक ही। यही समानता लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति है।

पर यह शक्ति तभी सार्थक होती है जब मतदाता सजग हो। जो व्यक्ति जाति, धर्म, पैसे या किसी क्षणिक लालच के बहकावे में आकर मत देता है, वह अनजाने में अपने ही भविष्य का सौदा कर बैठता है। इसी तरह मतदान के दिन घर बैठे रहना भी तटस्थता नहीं, बल्कि अपना निर्णय चुपचाप दूसरों के हाथ सौंप देना है। **मत केवल अधिकार नहीं, एक ऐसी अमानत है जिसका हिसाब आने वाली पीढ़ियाँ माँगेंगी।**

मतदाता की भूमिका चुनाव के दिन समाप्त भी नहीं हो जाती। चुने हुए प्रतिनिधियों से प्रश्न पूछना, उनके कामकाज पर नज़र रखना, अफ़वाहों और झूठी ख़बरों को परखकर ही किसी बात पर विश्वास करना, ये सब जागरूक नागरिक के कर्तव्य हैं। जिस देश के मतदाता चौकन्ने रहते हैं, वहाँ शासक भी मनमानी करने से डरते हैं। अंततः कोई भी सरकार उतनी ही अच्छी होती है, जितने अच्छे उसे चुनने वाले लोग होते हैं।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) लेखक के अनुसार मतदान के दिन घर बैठे रहना तटस्थता क्यों नहीं है?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

In January 1941, Subhas Chandra Bose was living under house arrest in his family home on Elgin Road in Calcutta. British police kept a constant watch on the house, and he had let it be known that he wished to stay alone in prayer and seclusion. Late one night, he slipped out disguised as a bearded Muslim insurance agent named Muhammad Ziauddin. His nephew Sisir drove him out of the city to Gomoh, a railway station in present-day Jharkhand, where he boarded a train for the north-west. From Peshawar he made his way across the frontier to Kabul. The authorities learned of his escape only days later, and by then Netaji had begun the long journey that would take him to Germany.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) परीक्षाओं में बढ़ती नक़ल

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: परीक्षाओं में बढ़ती नक़ल की प्रवृत्ति पर चिंता

महोदय,

पिछले सप्ताह एक परीक्षा-केंद्र के बाहर का दृश्य देखकर मन खिन्न हो गया। खिड़कियों के नीचे अभिभावक और युवक पर्चियाँ लिए खड़े थे और भीतर तक उत्तर पहुँचाने की होड़ लगी थी। नक़ल अब इक्के-दुक्के छात्रों की शरारत नहीं रही, धीरे-धीरे यह एक संगठित धंधे का रूप ले रही है।

इसकी सबसे बड़ी मार उन विद्यार्थियों पर पड़ती है जो साल भर ईमानदारी से पढ़ते हैं। जब नक़ल करने वाले उनसे अधिक अंक ले आते हैं, तो मेहनत पर से भरोसा उठने लगता है। प्रमाण-पत्रों का मूल्य घटता है और योग्यता की जगह जुगाड़ जीतने लगता है।

परीक्षा-केंद्रों पर कैमरे लगें, निरीक्षकों की अदला-बदली हो और पकड़े जाने पर दंड सख़्ती से लागू हो। विद्यालयों को रटने की जगह समझ पर आधारित पढ़ाई और मूल्यांकन अपनाना होगा। आशा है, आप इस विषय को अपने समाचार-पत्र में उचित स्थान देंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

संपादक को लिखे पत्र में समस्या, उसका दुष्परिणाम और सुझाव तीन अलग अनुच्छेदों में रखें; अंत में "उचित स्थान देने" का अनुरोध न भूलें, यही इसे शिकायती पत्र से अलग करता है।

(ख) फ़ुटपाथों पर अतिक्रमण

सेवा में,

संपादक महोदय,

प्रभात ख़बर,

कोलकाता।

विषय: फ़ुटपाथों पर बढ़ता अतिक्रमण और पैदल यात्रियों की कठिनाई

महोदय,

क्या आपने कभी गड़ियाहाट या श्यामबाज़ार के फ़ुटपाथ पर बिना सड़क पर उतरे सौ क़दम चलकर देखा है? दुकानों के तख़्त, ठेले, चाय की भट्ठियाँ और बाहर तक फैला सामान फ़ुटपाथ को इस तरह घेर लेते हैं कि पैदल चलने वाले को तेज़ रफ़्तार गाड़ियों के बीच से गुज़रना पड़ता है।

सबसे अधिक परेशानी बुज़ुर्गों, स्कूल जाते बच्चों और पहिया-कुर्सी पर चलने वालों को होती है। शिकायत करने पर कुछ दिन के लिए अतिक्रमण हटता है, फिर सब पहले जैसा हो जाता है। बरसात में, जब सड़क पर पानी भरा रहता है, यह मुसीबत और बढ़ जाती है।

फेरीवालों की रोज़ी-रोटी भी ज़रूरी है, इसलिए उन्हें उजाड़ने के बजाय तय समय और तय जगह पर बैठने की व्यवस्था होनी चाहिए। दुकानों के बाहर सामान फैलाने पर नियमित जुर्माना लगे। आपके समाचार-पत्र के माध्यम से मैं नगर निगम से इस दिशा में ठोस क़दम उठाने का अनुरोध करता हूँ।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

प्रश्न से शुरुआत पाठक और परीक्षक दोनों का ध्यान खींचती है; फेरीवालों की रोज़ी का पक्ष रखकर संतुलित सुझाव देने से पत्र एकतरफ़ा नहीं लगता और अंक बढ़ते हैं।

(ग) वरिष्ठ नागरिकों की पेंशन में देरी

सेवा में,
निदेशक,
पेंशन, भविष्य निधि एवं समूह बीमा निदेशालय,
पश्चिम बंगाल सरकार,
कोलकाता।

विषय: सेवानिवृत्त कर्मचारियों की पेंशन में हो रही देरी के संबंध में

महोदय,

मैं राज्य सरकार के शिक्षा विभाग से इसी वर्ष मार्च में सेवानिवृत्त हुआ हूँ। सेवानिवृत्ति से पहले ही सारे काग़ज़ात आपके निदेशालय को भेज दिए गए थे, पर सात महीने बाद भी न पेंशन भुगतान आदेश जारी हुआ है, न एक पैसा मिला है।

मेरे जैसे अनेक वरिष्ठ नागरिक इसी स्थिति में हैं। हममें से कई के लिए दवाइयों और घर-ख़र्च का एकमात्र सहारा यही पेंशन है। पूछताछ करने पर कभी फ़ाइल न मिलने की बात कही जाती है, तो कभी किसी अधूरे काग़ज़ का हवाला दिया जाता है, पर लिखित में कुछ नहीं बताया जाता। इस उम्र में बार-बार दफ़्तर के चक्कर लगाना शरीर और जेब, दोनों पर भारी पड़ता है।

अतः निवेदन है कि लंबित मामलों का शीघ्र निपटारा कराया जाए, कमी हो तो उसकी लिखित सूचना दी जाए और आवेदन की स्थिति जानने की सरल व्यवस्था बनाई जाए। मेरी पेंशन-फ़ाइल की संख्या XYZ है।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

सरकारी पत्र में अपनी सेवानिवृत्ति की तिथि, विभाग और फ़ाइल-संख्या जैसे ठोस विवरण दें और माँगें बिंदुवार रखें; भाषा विनम्र रहे, पर शिकायत स्पष्ट हो।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

स्वयं सहायता समूहों ने बदली ग्रामीण बंगाल की महिलाओं की तस्वीर

कोलकाता, 21 अक्टूबर (निज संवाददाता)। कभी चारदीवारी तक सीमित रहने वाली ग्रामीण बंगाल की महिलाएँ स्वयं सहायता समूहों के बल पर अपनी पहचान बना रही हैं। बाँकुड़ा से नदिया तक के गाँवों में दस-बारह महिलाओं के ये समूह हर महीने थोड़ी-थोड़ी बचत जमा करते हैं और ज़रूरत पड़ने पर आपस में ही क़र्ज़ देते हैं।

बचत की इस आदत ने बैंकों के दरवाज़े खोल दिए हैं। समूहों को मिले ऋण से महिलाएँ बकरी-पालन, मुर्ग़ी-पालन, कांथा-कढ़ाई और मिठाई बनाने जैसे काम शुरू कर रही हैं। राज्य का ग्रामीण आजीविका मिशन "आनंदधारा" प्रशिक्षण और बाज़ार दिलाने में मदद कर रहा है।

बदलाव केवल आमदनी तक सीमित नहीं है। समूह की बैठकों में बोलना सीखने वाली कई महिलाएँ अब ग्राम सभा में खुलकर अपनी बात रखती हैं। बच्चों की पढ़ाई और सेहत से जुड़े घरेलू फ़ैसलों में भी अब उनकी राय पूछी जाती है।

फिर भी राह आसान नहीं है। कई समूहों को समय पर ऋण नहीं मिल पाता, तो कई जगह उत्पादों के सही दाम के लिए बिचौलियों का मुँह ताकना पड़ता है। जानकारों के अनुसार महिलाओं को मोबाइल से लेन-देन और लेखा-जोखा रखने का प्रशिक्षण मिले और सामान को स्थायी बाज़ार मिले, तो ये समूह गाँवों की अर्थव्यवस्था की धुरी बन सकते हैं।

परीक्षा-संकेत

प्रतिवेदन में पहले अनुच्छेद में "क्या, कहाँ, कौन" बता दें, फिर लाभ, सामाजिक असर और चुनौतियाँ क्रम से रखें; बिना स्रोत के आँकड़े गढ़ने के बजाय "कई", "लगातार" जैसे शब्द सुरक्षित रहते हैं।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: विनम्रता — शक्ति का सच्चा रूप

विनम्रता दुर्बलता नहीं, बल्कि भीतरी दृढ़ता और गहरे ज्ञान की पहचान है। जैसे फलदार डाल झुकती है, वैसे ही सच्चा ज्ञानी अपने अज्ञान को पहचानकर विनम्र बनता है, जबकि अधूरा ज्ञान दिखावा करता है। विनम्र व्यक्ति अपनी बात दृढ़ता से रखता है और दूसरों को भी धैर्य से सुनता है। अहंकार सीखने का मार्ग बंद करता है, जबकि विनम्रता उसे खोल देती है। इसी कारण महान व्यक्ति सरल होते हैं और अंततः सम्मान पाते हैं।

(मूल गद्यांश: 217 शब्द; सार: 75 शब्द)

परीक्षा-संकेत

सार में उपमाएँ (डाल, गगरी) ज्यों-की-त्यों न दोहराएँ, केवल उनका भाव एक वाक्य में लें; शीर्षक में केंद्रीय विचार "विनम्रता शक्ति है" झलकना चाहिए।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है: **"लोकतंत्र का प्रहरी: जागरूक मतदाता"**।

यह शीर्षक इसलिए उचित है कि पूरा गद्यांश इसी विचार के चारों ओर घूमता है कि लोकतंत्र की असली शक्ति संसद या सरकार में नहीं, साधारण मतदाता के विवेक में है। लेखक बताता है कि मतदान के क्षण सब नागरिक बराबर होते हैं, पर यह बराबरी तभी सार्थक है जब मतदाता सजग हो। वह यह भी कहता है कि मतदाता की ज़िम्मेदारी चुनाव के बाद भी बनी रहती है, क्योंकि उसे अपने प्रतिनिधियों पर नज़र रखनी होती है। "प्रहरी" शब्द इसी निरंतर चौकसी का भाव प्रकट करता है।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> शीर्षक छोटा रखें और उसके बाद दो-तीन वाक्यों में उसका औचित्य गद्यांश के ही शब्दों से सिद्ध करें; केवल शीर्षक लिख देने पर पूरे अंक नहीं मिलते।

(ख) मतदान न करना तटस्थता क्यों नहीं

लेखक के अनुसार मतदान के दिन घर बैठे रहने वाला व्यक्ति भले ही यह समझे कि वह किसी पक्ष में नहीं है, पर वास्तव में वह अपना निर्णय दूसरों के हाथ सौंप देता है। चुनाव का परिणाम तो हर हाल में निकलेगा; फ़र्क़ केवल इतना है कि उस परिणाम में उसकी अपनी आवाज़ शामिल नहीं होगी। जो लोग मत डालते हैं, वही तय करते हैं कि शासन किसके हाथ में जाएगा, और उस निर्णय का असर मत न डालने वाले पर भी उतना ही पड़ता है। इस तरह चुप बैठना भी एक प्रकार का चुनाव है, जिसमें व्यक्ति अपने भविष्य का फ़ैसला अनजाने में दूसरों पर छोड़ देता है।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> "क्यों" वाले प्रश्न में पहले लेखक का मत सीधे शब्दों में लिखें, फिर उसका कारण समझाएँ; उत्तर गद्यांश की पंक्ति "निर्णय दूसरों के हाथ सौंप देना" से बँधा रहे।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

"मत केवल अधिकार नहीं, एक ऐसी अमानत है जिसका हिसाब आने वाली पीढ़ियाँ माँगेंगी" — इस पंक्ति में लेखक मत को अधिकार के साथ-साथ ज़िम्मेदारी के रूप में देखता है। अधिकार का उपयोग व्यक्ति अपनी इच्छा से करता है, पर अमानत वह वस्तु है जो किसी दूसरे के भरोसे पर हमें सौंपी जाती है और जिसे ईमानदारी से निभाना पड़ता है। आज दिया गया मत जो सरकार चुनता है, उसके फ़ैसलों का असर शिक्षा, पर्यावरण, अर्थव्यवस्था और समाज पर बरसों तक रहता है। इसलिए जब हम लालच, जाति या धर्म के बहकावे में मत देते हैं, तो उसका दंड हमारी संतानें भुगतती हैं। लेखक का आशय है कि मतदाता को अपना मत सोच-समझकर, भविष्य को ध्यान में रखकर देना चाहिए।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> आशय लिखते समय पंक्ति के मुख्य शब्द ("अमानत", "हिसाब") का अर्थ खोलें और गद्यांश के संदर्भ से जोड़ें; पंक्ति को उद्धरण-चिह्नों में एक बार लिख देना अच्छा प्रभाव छोड़ता है।

(घ) सारांश

लोकतंत्र साधारण मतदाता के विवेक पर टिका है, क्योंकि मतदान के समय अमीर-ग़रीब सबका मत बराबर होता है। यह शक्ति तभी सार्थक है जब मतदाता लालच या भेदभाव से ऊपर उठकर मत दे, और मतदान से दूर रहना भी अपना निर्णय दूसरों को सौंपना है। मत भविष्य की पीढ़ियों के प्रति ज़िम्मेदारी है। चुनाव के बाद भी जागरूक नागरिक को प्रतिनिधियों पर नज़र रखनी चाहिए, क्योंकि सरकार उतनी ही अच्छी होती है जितने उसके मतदाता।

परीक्षा-संकेत

सारांश में तीनों अनुच्छेदों का एक-एक मुख्य विचार अवश्य आए (समानता, सजगता, चुनाव के बाद की भूमिका); अपनी राय जोड़ने से अंक कटते हैं।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

जनवरी 1941 में सुभाषचंद्र बोस कलकत्ता के एल्गिन रोड स्थित अपने पैतृक घर में नज़रबंद थे। ब्रिटिश पुलिस घर पर चौबीसों घंटे पहरा देती थी, और उन्होंने सबको बता रखा था कि वे साधना में लीन रहकर अकेले, एकांत में रहना चाहते हैं। एक रात बहुत देर गए वे दाढ़ी बढ़ाए, मुहम्मद ज़ियाउद्दीन नाम के एक मुसलमान बीमा एजेंट के वेश में चुपके से घर से निकल गए। उनके भतीजे शिशिर गाड़ी चलाकर उन्हें शहर से बाहर गोमो ले गए, जो आज के झारखंड में एक रेलवे स्टेशन है। वहाँ से वे उत्तर-पश्चिम की ओर जाने वाली रेलगाड़ी में सवार हुए। पेशावर से वे सीमा पार करके काबुल जा पहुँचे। अधिकारियों को उनके निकल भागने की ख़बर कई दिन बाद मिली, और तब तक नेताजी उस लंबी यात्रा पर निकल पड़े थे जो उन्हें जर्मनी तक ले जाने वाली थी।

परीक्षा-संकेत

"हाउस अरेस्ट" के लिए "नज़रबंद", "स्लिप्ड आउट" के लिए "चुपके से निकल गए" और "हैड लेट इट बी नोन" के लिए "सबको बता रखा था" लिखा गया है; लंबे अंग्रेज़ी वाक्य को दो हिंदी वाक्यों में तोड़ना स्वाभाविक लगता है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र 6

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

किसी एक विषय पर पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें)। विकल्प (ग) ज़िलाधिकारी को लिखा जाने वाला सरकारी कार्यालयी पत्र है:

(क) सरकारी अस्पतालों में मरीज़ों की लंबी क़तारों की ओर ध्यान दिलाते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ख) त्योहारों पर पटाखों के शोर और धुएँ से होने वाली परेशानियों पर किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ग) अपने गाँव की कच्ची सड़क की मरम्मत और उसे पक्का कराने का अनुरोध करते हुए ज़िलाधिकारी को पत्र लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

हुगली के किनारे बढ़ता कटाव और विस्थापित परिवार

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

रूप ढल जाता है, विद्या भूली जा सकती है और पद तथा संपत्ति समय के साथ आते-जाते रहते हैं; पर चरित्र वह पूँजी है जो संकट की घड़ी में भी साथ नहीं छोड़ती। चरित्र-बल का अर्थ केवल बुरे कामों से बचे रहना नहीं, बल्कि अपने विवेक से सही राह चुनना और उस पर टिके रहना है, चाहे इसमें कितनी ही हानि हो। जो व्यक्ति लोभ, भय या प्रशंसा के आगे झुक जाता है, उसके वचन का कोई मोल नहीं रहता। दूसरी ओर, चरित्रवान व्यक्ति बोलता भले कम हो, उसकी कही बात को लोग पत्थर की लकीर मानते हैं। इतिहास गवाह है कि साधनहीन किंतु दृढ़ चरित्र वाले लोगों ने साम्राज्यों को चुनौती दी है, जबकि चरित्रहीन शासकों के विशाल राज्य भीतर से खोखले होकर ढह गए। चरित्र एक दिन में नहीं बनता। वह छोटे-छोटे निर्णयों से गढ़ा जाता है, जैसे कोई न देख रहा हो तब भी सच बोलना, दिया हुआ वचन निभाना और दूसरों के दुख को अपना समझना। इसीलिए घर और विद्यालय में बचपन से ही ऐसे संस्कार डालने चाहिए जो बालक को परिश्रमी, सत्यनिष्ठ और संयमी बनाएँ। जिस समाज के लोगों में चरित्र-बल होता है, वहाँ क़ानून का डर कम और आपसी विश्वास अधिक होता है। राष्ट्र की असली शक्ति उसकी सेना या ख़ज़ाने में नहीं, उसके नागरिकों के चरित्र में बसती है।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

पर्यटन अब केवल घूमने-फिरने का शौक़ नहीं रहा, यह अनेक क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन चुका है। सैलानियों के आने से होटल, परिवहन, हस्तशिल्प और छोटे दुकानदारों को काम मिलता है, और दूर-दराज़ के गाँव भी देश-दुनिया से जुड़ जाते हैं। पर

इस चमक का एक दूसरा पहलू भी है। जब किसी स्थान पर सैलानियों की भीड़ अचानक बढ़ती है, तो वहाँ की जीवन-शैली उनकी पसंद के हिसाब से ढलने लगती है। लोकगीत मंच पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रम भर रह जाते हैं, पारंपरिक भोजन की जगह हर कहीं एक जैसे व्यंजन बिकने लगते हैं और कारीगरों के हाथ के बने सामान की जगह कारख़ानों में बनी स्मृति-चिह्न वस्तुएँ ले लेती हैं। **संस्कृति जब बिकाऊ वस्तु बन जाती है, तो उसका रंग तो बचा रहता है, पर आत्मा खो जाती है।** इसका अर्थ यह नहीं कि पर्यटन से मुँह मोड़ लिया जाए। आवश्यकता ऐसे पर्यटन की है जिसमें स्थानीय समुदाय केवल सेवा देने वाला न रहे, बल्कि निर्णयों में भागीदार भी बने। गाँव के लोग स्वयं अपने घरों में अतिथियों को ठहराएँ और अपने उत्सवों तथा कारीगरी का परिचय अपनी शर्तों पर कराएँ, तो आय भी उन्हीं के हाथ आएगी और परंपरा भी जीवित रहेगी। सैलानी का भी दायित्व है कि वह किसी स्थान को केवल तस्वीरें खींचने की पृष्ठभूमि न समझे, बल्कि वहाँ के लोगों, उनकी बोली और रीति-रिवाज़ों का सम्मान करे। तभी पर्यटन दो संस्कृतियों के बीच सच्चा संवाद बन सकेगा।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) लेखक के अनुसार भीड़-भरा पर्यटन स्थानीय संस्कृति को किस प्रकार बदल देता है?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

In 1950, Mother Teresa founded the Missionaries of Charity in Calcutta, a small congregation of nuns devoted to serving the poorest of the poor. Dressed in simple white saris with blue borders, the sisters went into the city's slums and cared for people whom everyone else had abandoned. Two years later she opened Nirmal Hriday, a home near the Kalighat temple, where the destitute and the dying could spend their last days with dignity and love instead of loneliness and neglect. She often said that being unwanted was a worse poverty than hunger. Her work slowly spread far beyond India, and in 1979 she was awarded the Nobel Peace Prize. Characteristically, she asked that the money for the customary banquet be given to the poor.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) सरकारी अस्पतालों में लंबी क़तारें

सेवा में,
संपादक,
दैनिक विश्वमित्र,
कोलकाता।

विषय: सरकारी अस्पतालों के बहिरंग विभाग में लगने वाली लंबी क़तारें

महोदय,

सुबह छह बजते-बजते शहर के बड़े सरकारी अस्पताल के फाटक पर सैकड़ों लोग पर्ची कटाने के लिए खड़े हो जाते हैं। इनमें दूर-दराज़ के गाँवों से आए बुज़ुर्ग होते हैं, गोद में बीमार बच्चे लिए माँएँ होती हैं और बैसाखियों के सहारे टिके मरीज़ भी। पर्ची के बाद डॉक्टर को दिखाने, फिर जाँच कराने और अंत में दवा लेने के लिए अलग-अलग क़तारें लगती हैं। इन्हीं क़तारों में मरीज़ का पूरा दिन बीत जाता है और कई बार बारी आने से पहले ही खिड़की बंद हो जाती है। यदि घर बैठे मोबाइल से पर्ची बनवाने की सुविधा का विस्तार हो, अधिक खिड़कियाँ खोली जाएँ, बुज़ुर्गों और दिव्यांगों के लिए अलग क़तार हो तथा प्रतीक्षा-कक्ष में बैठने और पीने के पानी का प्रबंध हो, तो यह कष्ट काफ़ी घट सकता है। आशा है, आप यह पत्र प्रकाशित करके स्वास्थ्य विभाग तक जनता की यह पीड़ा पहुँचाएँगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 12 मार्च 2026

परीक्षा-संकेत

संपादक को लिखे पत्र में समस्या के साथ ठोस सुझाव भी दें; यहाँ चार व्यावहारिक उपाय एक ही वाक्य में गिनाए गए हैं, जिससे शब्द-सीमा भी बची और पत्र रचनात्मक भी लगा।

(ख) त्योहारों पर पटाखों का शोर और धुआँ

सेवा में,
संपादक,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: त्योहारों पर पटाखों के शोर और धुएँ से होने वाली परेशानियाँ

महोदय,

क्या किसी त्योहार की ख़ुशी बीमार की नींद और बच्चे की साँस छीनकर मनाई जानी चाहिए? काली पूजा और दीपावली की रातों में हमारे मोहल्ले में यही प्रश्न हर साल सिर उठाता है। आधी रात के बाद तक कान फाड़ देने वाले धमाके होते रहते हैं। दमे के रोगी खिड़कियाँ बंद करके भी खाँसते रहते हैं और नवजात शिशु चौंककर जाग उठते हैं। अगली सुबह पूरा इलाक़ा धुएँ की धुंध में लिपटा रहता है। नियम तो बने हैं, पर उनका पालन ढीला है। प्रशासन को चाहिए कि प्रतिबंधित पटाखों की बिक्री पर कड़ाई से रोक लगाए और तय समय के बाद आतिशबाज़ी करने वालों पर कार्रवाई करे। साथ ही विद्यालयों और पूजा-समितियों को भी दीयों और रोशनी वाले शांत उत्सव के लिए लोगों को प्रेरित करना चाहिए। यह बात आपके पन्नों पर आई, तो शायद अगली दीपावली कुछ अधिक उजली और साफ़ हो।

सधन्यवाद,
भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 25 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

प्रश्न से आरंभ करने पर परीक्षक का ध्यान तुरंत खिंचता है; पर पत्र को भाषण न बनने दें, प्रश्न के तुरंत बाद अपने मोहल्ले का ठोस दृश्य रखें।

(ग) गाँव की कच्ची सड़क की मरम्मत

सेवा में,

ज़िलाधिकारी,

दक्षिण चौबीस परगना, अलीपुर,

कोलकाता।

विषय: ग्राम XYZ की कच्ची सड़क की मरम्मत और उसे पक्का कराने हेतु अनुरोध

महोदय,

हमारे गाँव XYZ को प्रखंड मुख्यालय और मुख्य सड़क से जोड़ने वाला एकमात्र रास्ता आज भी कच्चा है। बरसात आते ही यह कीचड़ और गड्ढों से भर जाता है, जिनमें कई जगह घुटनों तक पानी जमा रहता है। साइकिल और मोटरसाइकिल फिसलकर गिरती हैं, बच्चे विद्यालय नहीं पहुँच पाते और किसान अपनी सब्ज़ी समय पर हाट तक नहीं ले जा पाते। सबसे अधिक कठिनाई रोगियों और गर्भवती स्त्रियों को होती है, क्योंकि एंबुलेंस गाँव तक आ ही नहीं पाती। ग्राम पंचायत के माध्यम से हम कई बार आवेदन दे चुके हैं, पर अब तक कोई ठोस काम आरंभ नहीं हुआ। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि बरसात से पहले इस सड़क पर मिट्टी भरवाकर तत्काल मरम्मत कराई जाए और किसी उपयुक्त ग्रामीण सड़क योजना के अंतर्गत इसे पक्का कराने की स्वीकृति दी जाए। इस कृपा के लिए समस्त ग्रामवासी आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

(ग्राम XYZ के निवासियों की ओर से)

पता: XYZ

दिनांक: 4 अप्रैल 2026

परीक्षा-संकेत

सरकारी पत्र में "पहले क्या प्रयास हुए" का उल्लेख अवश्य करें और अंत में स्पष्ट माँग रखें; यहाँ तत्काल मरम्मत और स्थायी समाधान को अलग-अलग माँगा गया है।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

हुगली के किनारे खिसकती ज़मीन, उजड़ते घर

कटाव से बेघर हुए परिवार राहत शिविरों और रिश्तेदारों के भरोसे

कोलकाता, 18 सितंबर 2026 (निज संवाददाता)। हुगली नदी के किनारे बसे कई गाँवों में इस बार बरसात अपने साथ घर-आँगन भी बहा ले गई। नदिया, हुगली और पूर्व बर्धमान ज़िलों के तटवर्ती इलाक़ों से लगातार ख़बरें आ रही हैं कि नदी का किनारा रातों-रात कुछ हाथ भीतर खिसक आया और उसके साथ मकान, खेत और बाग़ान पानी में समा गए।

ग्रामीणों के अनुसार कटाव की आशंका बरसों से थी, पर इस बार पानी का बहाव तेज़ होने से तबाही अचानक आई। बहुत-से परिवार विद्यालय-भवनों और पंचायत के अस्थायी शिविरों में रह रहे हैं, तो कुछ ने रिश्तेदारों के यहाँ शरण ली है। खेती पर निर्भर परिवारों के सामने रोज़ी का संकट खड़ा हो गया है।

जानकारों का कहना है कि नदी के बदलते बहाव, किनारों से अंधाधुंध बालू-खनन और तटबंधों की समय पर मरम्मत न होने से समस्या गहराती गई है। स्थानीय प्रशासन ने राहत-सामग्री बाँटने और किनारों पर बोरियाँ डालकर अस्थायी बचाव का काम आरंभ किया है। ग्रामीणों की माँग है कि तटबंधों को स्थायी रूप से मज़बूत किया जाए और विस्थापितों को सुरक्षित स्थान पर ज़मीन देकर बसाया जाए, ताकि उन्हें हर बरसात में नए सिरे से उजड़ना न पड़े।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> प्रतिवेदन में शीर्षक, उपशीर्षक और "निज संवाददाता" वाली तिथि-पंक्ति अंक दिलाती है; कारण बताने के लिए "जानकारों का कहना है" जैसा स्रोत दें, ताकि रिपोर्ट आपकी निजी राय न लगे, और अंत में पीड़ितों की माँग रखें।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: चरित्र — व्यक्ति और राष्ट्र की सच्ची पूँजी

रूप, विद्या और धन अस्थिर हैं, पर चरित्र संकट में भी साथ देने वाली पूँजी है। चरित्र-बल का अर्थ है विवेक से चुने मार्ग पर हानि सहकर भी अडिग रहना। लोभ और भय के आगे झुकने वाले की बात का मोल नहीं रहता, जबकि चरित्रवान पर सब भरोसा करते हैं। चरित्र छोटे-छोटे सच्चे आचरणों से बनता है, इसलिए बचपन से संस्कार आवश्यक हैं। चरित्रवान नागरिक ही समाज में विश्वास और राष्ट्र में शक्ति लाते हैं।

(मूल गद्यांश: 216 शब्द; सार: 75 शब्द)

> **परीक्षा-संकेत**
>
> सार में इतिहास के उदाहरण जैसे विस्तार छोड़ दें और केवल केंद्रीय विचार की कड़ी रखें; शीर्षक में गद्यांश के अंतिम वाक्य का निष्कर्ष झलकना चाहिए।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

शीर्षक: पर्यटन और संस्कृति — लाभ के साथ सावधानी

यह शीर्षक इसलिए उपयुक्त है कि गद्यांश पर्यटन के दोनों पक्षों को साथ रखता है। एक ओर वह बताता है कि सैलानियों के आने से होटल, परिवहन, हस्तशिल्प और छोटे दुकानदारों को काम मिलता है और दूर के गाँव दुनिया से जुड़ते हैं। दूसरी ओर वह चेताता है कि बेलगाम भीड़ स्थानीय गीत, भोजन और कारीगरी को बाज़ार की वस्तु बना देती है। लेखक पर्यटन को त्यागने की नहीं, बल्कि उसे स्थानीय समुदाय की भागीदारी और सैलानियों के सम्मान-भाव से संतुलित करने की बात करता है। "लाभ के साथ सावधानी" इसी संतुलन को संक्षेप में कह देता है।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> जिस गद्यांश में लाभ और हानि दोनों हों, उसका शीर्षक भी दोनों को छुए; केवल "पर्यटन का महत्त्व" लिखना आधा उत्तर होगा।

(ख) भीड़-भरा पर्यटन स्थानीय संस्कृति को कैसे बदलता है

लेखक के अनुसार जब किसी स्थान पर सैलानियों की भीड़ अचानक बढ़ जाती है, तो वहाँ का जीवन अपनी स्वाभाविक लय छोड़कर बाहर से आने वालों की रुचि के अनुसार ढलने लगता है। जो लोकगीत कभी खेतों, मेलों और घरेलू उत्सवों में अपने-आप गाए जाते थे, वे सैलानियों के मनोरंजन के लिए मंच पर होने वाले कार्यक्रम भर रह जाते हैं। स्थानीय पकवानों की जगह हर पर्यटन-स्थल पर मिलने वाले एक जैसे व्यंजन बिकने लगते हैं। कारीगरों के हाथ से बनी वस्तुओं की जगह कारख़ानों में बनी सस्ती स्मृति-चिह्न वस्तुएँ ले लेती हैं। इस तरह संस्कृति का बाहरी रूप तो दिखता है, पर उसकी मौलिकता घटती जाती है।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> "लेखक के अनुसार" वाले प्रश्न में गद्यांश के तीनों उदाहरण (गीत, भोजन, हस्तशिल्प) क्रम से लें और अपनी राय न जोड़ें।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

पंक्ति है: "संस्कृति जब बिकाऊ वस्तु बन जाती है, तो उसका रंग तो बचा रहता है, पर आत्मा खो जाती है।"

आशय यह है कि किसी समुदाय की संस्कृति उसके जीवन से उपजती है; उसके गीत, नृत्य, पहनावे और भोजन के पीछे आस्था, स्मृतियाँ और सामूहिक अनुभव होते हैं। जब यही सब केवल सैलानियों को रिझाने और पैसा कमाने के लिए प्रस्तुत किया जाने लगता है, तो उसका बाहरी आकर्षण तो बना रहता है, पर उसके भीतर का भाव और अर्थ मिट जाता है। तब नृत्य उत्सव का आनंद न रहकर टिकट वाला तमाशा बन जाता है। लेखक का संकेत है कि बाज़ार की माँग के आगे परंपरा का दिखावा बचाना पर्याप्त नहीं; उसका जीवंत अर्थ बचाना ज़रूरी है।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> यहाँ "रंग" बाहरी रूप है और "आत्मा" भीतर का अर्थ; इस जोड़े को अलग-अलग समझाकर टिकट वाले नृत्य जैसा एक उदाहरण दें, उत्तर पूरा हो जाएगा।

(घ) सारांश

पर्यटन अनेक क्षेत्रों में रोज़गार और संपर्क का बड़ा साधन है, पर अनियंत्रित भीड़ स्थानीय गीत, भोजन और कारीगरी को बाज़ारू बनाकर संस्कृति की मौलिकता छीन लेती है। उपाय पर्यटन छोड़ना नहीं, बल्कि ऐसा पर्यटन है जिसमें स्थानीय लोग निर्णयों में भागीदार हों, अपने घरों में अतिथि ठहराएँ और अपनी परंपरा अपनी शर्तों पर दिखाएँ। सैलानी भी स्थानीय लोगों और रीति-रिवाज़ों का सम्मान करें, तभी पर्यटन संस्कृतियों के बीच सच्चा संवाद बनेगा।

परीक्षा-संकेत

सारांश में समस्या, समाधान और निष्कर्ष, तीनों का एक-एक वाक्य हो; गद्यांश की मोटी पंक्ति को ज्यों-का-त्यों न उतारें।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

सन् 1950 में मदर टेरेसा ने कलकत्ता में "मिशनरीज़ ऑफ़ चैरिटी" की स्थापना की। यह भिक्षुणियों का एक छोटा-सा संघ था, जिसने दीन-हीनों में भी सबसे दीन लोगों की सेवा को अपना ध्येय बनाया। नीली किनारी वाली सादी सफ़ेद साड़ियाँ पहने बहनें शहर की झुग्गी-बस्तियों में जातीं और उन लोगों की देखभाल करतीं जिन्हें बाक़ी सबने ठुकरा दिया था। दो वर्ष बाद उन्होंने कालीघाट मंदिर के पास "निर्मल हृदय" नामक आश्रम खोला, जहाँ निराश्रित और मरणासन्न लोग अपने अंतिम दिन अकेलेपन और उपेक्षा में नहीं, बल्कि सम्मान और स्नेह के बीच बिता सकते थे। वे प्रायः कहा करती थीं कि यह एहसास कि आपको कोई नहीं चाहता, भूख से भी बड़ी दरिद्रता है। धीरे-धीरे उनका काम भारत की सीमाओं से बहुत आगे फैल गया और 1979 में उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अपने स्वभाव के अनुरूप उन्होंने अनुरोध किया कि सम्मान में होने वाले पारंपरिक भोज का पैसा ग़रीबों को दे दिया जाए।

परीक्षा-संकेत

कठिन अंश: "द पुअरेस्ट ऑफ़ द पुअर" को "दीन-हीनों में भी सबसे दीन" लिखा गया, शब्दशः "ग़रीबों में सबसे ग़रीब" से यह अधिक सहज है; "कॉन्ग्रिगेशन ऑफ़ नन्स" के लिए "भिक्षुणियों का संघ" और "कैरेक्टरिस्टिकली" के लिए "अपने स्वभाव के अनुरूप" चुना गया। संस्था और आश्रम के नाम उद्धरण-चिह्नों में देवनागरी में ही लिखें, उनका अनुवाद न करें।

अभ्यास प्रश्न-पत्र 7

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

किसी एक विषय पर पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें)। विकल्प (ग) सरकारी कार्यालय को लिखा जाने वाला पत्र है:

(क) सोशल मीडिया पर फैलती झूठी ख़बरों से समाज को होने वाली हानि की ओर ध्यान दिलाते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ख) बच्चों में बढ़ते मोटापे और जंक फ़ूड की आदत पर चिंता प्रकट करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ग) अपने क्षेत्र में बिजली की अनियमित आपूर्ति की शिकायत करते हुए पश्चिम बंगाल राज्य विद्युत वितरण निगम के प्रबंध निदेशक को पत्र लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

कोलकाता पुस्तक मेले की रौनक और पाठकों का उत्साह

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

हमारी भीतरी शक्तियों में आत्मविश्वास का स्थान सबसे ऊँचा है। यह वह दीपक है जो अँधेरे रास्ते पर भी पाँव को डगमगाने नहीं देता। जिस व्यक्ति को अपने ऊपर भरोसा होता है, वह कठिनाइयों को बाधा नहीं, परीक्षा समझता है और हर ठोकर से कुछ सीखकर आगे बढ़ जाता है। पर जो मन-ही-मन हार मान बैठता है, उसके लिए छोटी-सी अड़चन भी पहाड़ बन जाती है। संसार के इतिहास में ऐसे असंख्य लोग हुए हैं जिनके पास न धन था, न सहारा, फिर भी केवल अपने विश्वास के बल पर उन्होंने असंभव को संभव कर दिखाया।

परंतु आत्मविश्वास और अहंकार में बड़ा अंतर है। आत्मविश्वास परिश्रम, अनुभव और आत्म-परीक्षण से उपजता है, जबकि अहंकार दूसरों को छोटा समझने से। आत्मविश्वासी व्यक्ति अपनी भूल स्वीकार करने में संकोच नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि भूल सुधारकर ही वह और मज़बूत बनेगा। अहंकारी अपनी ग़लती छिपाता है और धीरे-धीरे अपने ही गढ़े भ्रम में क़ैद हो जाता है।

आत्मविश्वास कोई जन्मजात वरदान नहीं है, इसे साधना पड़ता है। छोटे-छोटे लक्ष्य तय करना, उन्हें पूरा करना और असफलता को अंत न मानना, यही इसकी सीढ़ियाँ हैं। जो व्यक्ति अपने भीतर के इस दीपक को जलाए रखता है, उसे बाहर के अँधेरे से डरने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

विज्ञान का सबसे बड़ा उपहार मशीनें या दवाइयाँ नहीं, बल्कि सोचने का वह ढंग है जो हर बात को परखकर स्वीकार करना सिखाता है। वैज्ञानिक दृष्टि पूछती है कि कोई घटना क्यों घटी, उसके पीछे कौन-सा कारण है और क्या उस कारण को दोबारा जाँचा जा सकता है। अंधविश्वास की चाल ठीक उलटी है। वह बिना प्रमाण के किसी बात को सच मान लेता है और प्रश्न करने वाले को अधर्मी या नासमझ ठहरा देता है।

अजीब बात है कि हम विज्ञान की हर सुविधा का उपयोग करते हैं, पर उसकी दृष्टि अपनाने से कतराते हैं। मोबाइल फ़ोन पर ग्रहों की चाल देखकर शुभ-अशुभ तय किया जाता है, बीमार बच्चे को डॉक्टर के बजाय झाड़-फूँक करने वाले के पास ले जाया जाता है और बिल्ली के रास्ता काटने पर यात्रा टाल दी जाती है। **सुविधाएँ हमने विज्ञान से ले लीं, पर विवेक को अब भी परंपरा की अँधेरी कोठरी में बंद रखा है।**

अंधविश्वास केवल व्यक्तिगत भूल नहीं, समाज के लिए घातक भी है। इसके नाम पर ठगी होती है, स्त्रियों को डायन बताकर सताया जाता है और रोगी समय पर इलाज से वंचित रह जाते हैं। इसका उपाय उपहास नहीं, शिक्षा है। जब बच्चे विद्यालय में प्रयोग करके स्वयं देखेंगे कि ग्रहण सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी की स्थिति का परिणाम है, तब कोई उन्हें डरा नहीं सकेगा। विज्ञान को प्रयोगशाला से निकालकर जीवन के व्यवहार में उतारना ही सच्ची प्रगति है।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(ख) लेखक के अनुसार वैज्ञानिक दृष्टि और अंधविश्वास में मूल अंतर क्या है?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

In 1928, while working at the Indian Association for the Cultivation of Science in Calcutta, C. V. Raman made a discovery that changed the course of physics. Together with his student K. S. Krishnan, he observed that when a beam of light passes through a transparent liquid, a small part of the scattered light changes its colour, that is, its wavelength. This change carries information about the molecules that scatter the light. The phenomenon came to be known as the Raman effect. In 1930, Raman was awarded the Nobel Prize in Physics for this work. India celebrates 28 February every year as National Science Day, because it was on this date that Raman announced his discovery. Today, Raman spectroscopy is used in fields ranging from chemistry to medicine.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) सोशल मीडिया पर फैलती झूठी ख़बरें

सेवा में,
संपादक महोदय,
प्रभात ख़बर,
कोलकाता।

विषय: सोशल मीडिया पर फैलती झूठी ख़बरों से उत्पन्न ख़तरे के संबंध में।

महोदय,

एक छोटे-से संदेश ने हमारे पूरे मोहल्ले को दो दिन तक डराए रखा। उसमें लिखा था कि पास के जलाशय का पानी ज़हरीला हो गया है। लोग घबराकर बोतलबंद पानी ख़रीदने दौड़ पड़े। फिर नगर निगम ने साफ़ किया कि ख़बर मनगढ़ंत थी, पर तब तक डर अपना काम कर चुका था।

ऐसी घटनाएँ अब आम हो चली हैं। मोबाइल पर आया हर संदेश बिना जाँचे आगे बढ़ा दिया जाता है। कभी किसी समुदाय के ख़िलाफ़ अफ़वाह उड़ती है, तो कभी नक़ली इलाज के नुस्ख़े बाँटे जाते हैं। इससे आपसी सद्भाव भी बिगड़ता है और लोगों की सेहत भी दाँव पर लगती है।

मेरा सुझाव है कि आपका पत्र 'सच क्या है' नाम से एक नियमित स्तंभ छापे, जिसमें चर्चित ख़बरों की सच्चाई परखी जाए। स्कूलों और पुस्तकालयों में डिजिटल साक्षरता के शिविर भी लगने चाहिए। पाठक भी कोई संदेश आगे भेजने से पहले उसका स्रोत अवश्य जाँचें।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 15 जुलाई 2026

परीक्षा-संकेत

अफ़वाह वाले विषय पर किसी एक अफ़वाह का पूरा क़िस्सा, फैलने से खंडन तक, समस्या को सबसे साफ़ दिखाता है; अंत में समाचार-पत्र और पाठकों, दोनों के लिए अलग-अलग ठोस सुझाव देने से पत्र पूरा लगता है।

(ख) बच्चों में बढ़ता मोटापा और जंक फ़ूड

सेवा में,
संपादक महोदय,
दैनिक विश्वमित्र,
कोलकाता।

विषय: बच्चों में बढ़ते मोटापे और जंक फ़ूड की आदत पर चिंता।

महोदय,

डॉक्टरों की चेतावनी है कि कम उम्र का मोटापा आगे चलकर मधुमेह, उच्च रक्तचाप और जोड़ों के दर्द की जड़ बनता है। फिर भी छुट्टी की घंटी बजते ही स्कूलों के फाटक के बाहर ठेलों पर चिप्स, नूडल्स, बर्गर और ठंडे पेय के लिए बच्चों की भीड़ टूट पड़ती है। घर लौटकर भी वे मोबाइल के सामने बैठे-बैठे पैकेटबंद नाश्ता करते रहते हैं। खेल के मैदान सूने पड़े हैं और बच्चों का वज़न बढ़ता जा रहा है।

शरीर ही नहीं, बच्चों का आत्मविश्वास भी इससे डगमगाता है। रंगीन विज्ञापन इस आदत को और पक्का कर देते हैं।

मेरा निवेदन है कि विद्यालयों की कैंटीन में तले-भुने और अधिक चीनी वाले खाद्य पदार्थों पर रोक लगे और रोज़ कम-से-कम एक घंटा खेलकूद अनिवार्य हो। माता-पिता भी टिफ़िन में फल, अंकुरित अनाज और घर का बना भोजन दें। आशा है, आप इस विषय को प्रमुखता से छापेंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 15 जुलाई 2026

परीक्षा-संकेत

स्वास्थ्य वाले विषय में किसी विशेषज्ञ की चेतावनी से आरंभ करें और फिर उसके ठीक उलट रोज़ का दृश्य रखें; यह विरोध पत्र को धार देता है। उपायों में विद्यालय और परिवार, दोनों की भूमिका बताने से उत्तर संतुलित दिखता है।

(ग) बिजली की अनियमित आपूर्ति

सेवा में,
प्रबंध निदेशक,
पश्चिम बंगाल राज्य विद्युत वितरण निगम लिमिटेड,
विद्युत भवन, साल्ट लेक,
कोलकाता।

विषय: XYZ क्षेत्र में बिजली की अनियमित आपूर्ति के संबंध में।

महोदय,

पिछले एक महीने से हमारे क्षेत्र XYZ में रात के नौ बजे, ठीक पढ़ाई के समय, बत्ती गुल होना रोज़ की बात है। दिन में चार-पाँच बार बिजली चली जाती है और कभी-कभी घंटों तक नहीं लौटती। उमस भरी रातों में बुज़ुर्गों और बीमारों का बुरा हाल हो जाता है। वोल्टेज के बार-बार घटने-बढ़ने से कई घरों के पंखे, फ्रिज और दूसरे उपकरण ख़राब हो चुके हैं।

परीक्षाओं से ठीक पहले विद्यार्थियों की पढ़ाई चौपट हो रही है और छोटे दुकानदारों तथा दर्ज़ियों का काम ठप पड़ जाता है। स्थानीय शिकायत केंद्र को कई बार फ़ोन किया गया, पर हर बार केवल आश्वासन मिला।

आपसे विनम्र निवेदन है कि क्षेत्र के पुराने ट्रांसफ़ॉर्मरों और जर्जर तारों की जाँच कराकर उन्हें शीघ्र बदलवाया जाए। यदि मरम्मत के लिए कटौती आवश्यक हो, तो उसकी सूचना पहले से दी जाए। आशा है, आप इस समस्या पर तुरंत ध्यान देंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 15 जुलाई 2026

परीक्षा-संकेत

सरकारी निगम को लिखे शिकायती पत्र में भाषा विनम्र पर दृढ़ रखें; समस्या कब से है, किसे क्या हानि हो रही है और आप क्या चाहते हैं, ये तीनों बातें अलग अनुच्छेदों में आएँ।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

किताबों के मेले में उमड़ा शहर, पाठकों का उत्साह चरम पर

कोलकाता, 2 फ़रवरी 2026 (निज संवाददाता)। साल्ट लेक के मेला प्रांगण में चल रहा अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला इन दिनों शहर का सबसे बड़ा आकर्षण बना हुआ है। रविवार को तो प्रवेश द्वारों के बाहर सुबह से ही लंबी क़तारें लग गईं। किताबों से भरे थैले लिए परिवार, कॉलेज के विद्यार्थी और बुज़ुर्ग पाठक देर शाम तक स्टॉलों के बीच घूमते दिखे।

इस बार मेले में देश-विदेश के अनेक प्रकाशक आए हैं। बांग्ला साहित्य के स्टॉलों पर सबसे ज़्यादा भीड़ रही, पर हिंदी, अंग्रेज़ी, उर्दू और संथाली पुस्तकों के मंडपों में भी पाठकों की कमी नहीं थी। बच्चों के लिए चित्र-कथाओं और सचित्र विज्ञान-पुस्तकों का अलग कोना बनाया गया है, जहाँ कहानी-पाठ के सत्र भी हो रहे हैं।

लघु पत्रिकाओं के मंडप में युवा कवियों ने अपनी रचनाएँ सुनाईं, तो मुख्य सभागार में लेखकों से संवाद के कार्यक्रमों में श्रोताओं ने खुलकर सवाल पूछे। कई प्रकाशकों का कहना था कि ई-पुस्तकों के इस दौर में भी छपी किताबों की माँग घटी नहीं है।

मेले में आए एक सेवानिवृत्त शिक्षक ने कहा, "यहाँ आकर लगता है कि कोलकाता आज भी पढ़ने वाला शहर है।" आयोजकों के अनुसार मेला अगले रविवार तक चलेगा।

परीक्षा-संकेत

प्रतिवेदन में शीर्षक, तिथि-स्थान वाली पंक्ति और किसी व्यक्ति का छोटा-सा कथन अवश्य रखें; मेले जैसे आयोजन की रिपोर्ट में भीड़, कार्यक्रम और भाषाओं की विविधता, तीनों के दृश्य दें; समापन आयोजकों की सूचना से करें।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: आत्मविश्वास: सफलता का दीपक

आत्मविश्वास मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है। इसके सहारे व्यक्ति कठिनाइयों को परीक्षा मानकर उनसे सीखता हुआ आगे बढ़ता है, जबकि मन से हारा व्यक्ति छोटी बाधा से भी टूट जाता है। आत्मविश्वास परिश्रम और आत्म-परीक्षण से जन्मता है और भूल मानने का साहस देता है; अहंकार दूसरों को तुच्छ समझता है और भूल छिपाता है। यह गुण अभ्यास से विकसित होता है: छोटे लक्ष्य पूरे करते जाना और असफलता को अंत न मानना ही इसका मार्ग है।

(मूल गद्यांश: 205 शब्द; सार: 78 शब्द)

परीक्षा-संकेत

इस गद्यांश की धुरी "आत्मविश्वास बनाम अहंकार" का भेद है; दोनों की तुलना सार में एक ही वाक्य में कस दें, और "साधना पड़ता है" वाला अंतिम विचार छूटने न दें।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है: **"विज्ञान की सुविधा नहीं, विज्ञान की दृष्टि"**।

यह शीर्षक इसलिए उचित है कि पूरा गद्यांश इसी बात पर टिका है कि विज्ञान का असली मूल्य उसकी बनाई चीज़ों में नहीं, बल्कि परखकर सोचने की आदत में है। लेखक दिखाता है कि हम विज्ञान की सुविधाएँ तो भोग रहे हैं, पर उसकी दृष्टि न अपनाने के कारण अंधविश्वास में जकड़े हुए हैं। अंत में वह इसी दृष्टि को जीवन में उतारने को सच्ची प्रगति बताता है। इस प्रकार शीर्षक गद्यांश की शिकायत और उसका समाधान, दोनों को एक साथ कह देता है।

परीक्षा-संकेत

"यह नहीं, वह" वाली बनावट का शीर्षक तुलना-प्रधान गद्यांश के लिए अच्छा रहता है; उसका औचित्य गद्यांश के अंतिम वाक्य से जोड़कर बताएँ।

(ख) वैज्ञानिक दृष्टि और अंधविश्वास का अंतर

लेखक के अनुसार वैज्ञानिक दृष्टि किसी भी बात को आँख मूँदकर नहीं मानती। वह पूछती है कि घटना क्यों घटी, उसका कारण क्या है और क्या उस कारण को दोबारा जाँचकर पुष्ट किया जा सकता है। यानी वह प्रमाण और परख पर टिकी है।

अंधविश्वास इसके ठीक उलटा चलता है। वह बिना किसी प्रमाण के किसी बात को सच मान लेता है। इतना ही नहीं, जो व्यक्ति उस पर प्रश्न उठाता है, उसे अधर्मी या नासमझ कहकर चुप करा दिया जाता है। इस प्रकार दोनों का मूल अंतर यह है कि विज्ञान प्रश्न को आमंत्रित करता है, जबकि अंधविश्वास प्रश्न से डरता है।

परीक्षा-संकेत

तुलना वाले प्रश्न में दोनों पक्षों को अलग-अलग अनुच्छेद दें और अंत में एक पंक्ति का निष्कर्ष लिखें; उत्तर गद्यांश के शब्दों के आस-पास ही रहे।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

"सुविधाएँ हमने विज्ञान से ले लीं, पर विवेक को अब भी परंपरा की अँधेरी कोठरी में बंद रखा है।"

इस पंक्ति में लेखक हमारे दोहरे आचरण पर व्यंग्य करता है। मोबाइल, बिजली, दवाइयाँ जैसी सुविधाएँ विज्ञान की देन हैं और हम इनका भरपूर लाभ उठाते हैं। पर जिस तर्क और परख से ये चीज़ें बनीं, उसे हम अपने सोच-विचार में जगह नहीं देते। हमारी बुद्धि आज भी बिना जाँची-परखी रूढ़ियों से बँधी है, जिसे लेखक ने "अँधेरी कोठरी" कहा है। आशय यह है कि केवल विज्ञान की वस्तुएँ अपनाने से कोई समाज आधुनिक नहीं बनता; उसके लिए वैज्ञानिक ढंग से सोचना भी ज़रूरी है।

परीक्षा-संकेत

इस पंक्ति का असली अंक व्यंग्य पहचानने में है: "सुविधा ले ली, विवेक नहीं" वाला दोहरापन स्पष्ट शब्दों में लिखें।

(घ) सारांश

विज्ञान की असली देन प्रमाण के आधार पर परखकर सोचने की आदत है, जबकि अंधविश्वास बिना प्रमाण के मानता है और प्रश्न करने वालों को दबाता है। हम विज्ञान की सुविधाएँ तो लेते हैं, पर हमारी सोच आज भी रूढ़ियों से बँधी है। अंधविश्वास ठगी, स्त्रियों के उत्पीड़न और इलाज में देरी का कारण बनता है। इसका उपाय उपहास नहीं, बल्कि शिक्षा और स्वयं किए गए प्रयोग हैं। वैज्ञानिक दृष्टि को जीवन में अपनाना ही सच्ची प्रगति है।

परीक्षा-संकेत

सारांश में गद्यांश के तीनों अनुच्छेदों का एक-एक मुख्य विचार आए और लंबाई मूल की लगभग एक-तिहाई रहे; उदाहरणों की सूची (बिल्ली, ग्रहण) न दोहराएँ।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

सन् 1928 में कलकत्ता की संस्था 'इंडियन एसोसिएशन फ़ॉर द कल्टिवेशन ऑफ़ साइंस' में काम करते हुए सी. वी. रामन ने एक ऐसी खोज की, जिसने भौतिकी की दिशा ही बदल दी। अपने शिष्य के. एस. कृष्णन के साथ उन्होंने देखा कि जब प्रकाश की किरण किसी पारदर्शी द्रव से होकर गुज़रती है, तो बिखरे हुए प्रकाश का एक छोटा-सा अंश अपना रंग, अर्थात् अपना तरंगदैर्ध्य, बदल लेता है। यह परिवर्तन उन अणुओं के बारे में जानकारी देता है, जिनसे टकराकर प्रकाश बिखरता है। यही घटना आगे चलकर 'रामन प्रभाव' कहलाई। इस कार्य के लिए रामन को 1930 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला। भारत हर वर्ष 28 फ़रवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाता है, क्योंकि इसी दिन रामन ने अपनी खोज की घोषणा की थी। आज रामन स्पेक्ट्रमिकी का उपयोग रसायन-विज्ञान से लेकर चिकित्सा तक अनेक क्षेत्रों में होता है।

परीक्षा-संकेत

"भौतिकी के मार्ग को बदलना" जैसे शब्दशः अनुवाद के बजाय मुहावरेदार "भौतिकी की दिशा ही बदल दी" लिखा है; "स्कैटर्ड लाइट" के लिए सरल "बिखरा हुआ प्रकाश" रखा है (शास्त्रीय शब्द "प्रकीर्णित प्रकाश" भी सही है); "पुरस्कार प्रदान किया गया" वाले कर्मवाच्य को सहज "पुरस्कार मिला" में बदला है। संस्था का नाम देवनागरी लिप्यंतरण में रखना सुरक्षित है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र 8

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

किसी एक विषय पर पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें):

(क) रेलवे स्टेशनों पर फैली गंदगी की ओर ध्यान दिलाते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ख) किसानों को उनकी फ़सल का उचित दाम न मिलने की समस्या पर किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ग) छात्रवृत्ति के भुगतान में हो रही देरी के संबंध में सचिव, पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार को एक पत्र लिखिए। (सरकारी कार्यालय को पत्र)

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

मेट्रो रेल से बदलता शहरी जीवन

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

मनुष्य की महानता उसके वस्त्रों की चमक या भवन की ऊँचाई से नहीं, उसके विचारों की गहराई से नापी जाती है। फिर भी हम प्रायः बाहरी आडंबर को ही सफलता का पैमाना मान बैठते हैं। नया घर, नई गाड़ी, नए-नए परिधान — इच्छाओं की यह सूची कभी समाप्त नहीं होती और मनुष्य जीवन भर उसके पीछे दौड़ता रहता है। इस दौड़ में वह इतना थक जाता है कि सोचने, पढ़ने और दूसरों के दुख को समझने का अवकाश ही उसके पास नहीं बचता। सादगी इस दौड़ से मुक्ति का नाम है। जिसकी आवश्यकताएँ थोड़ी हैं, वह कम में संतुष्ट रहता है; उसका मन चिंता से हल्का रहता है और उसकी ऊर्जा ऊँचे लक्ष्यों की ओर लगती है। हमारे देश में ऋषियों से लेकर आधुनिक जननायकों तक ने सादा जीवन अपनाकर ही समाज को दिशा दी। सादगी का अर्थ दरिद्रता या जीवन से पलायन नहीं है। यह विवेक है — यह जानना कि क्या आवश्यक है और क्या केवल दिखावा। जब आवश्यकताएँ सीमित होती हैं, तब मनुष्य प्रकृति के साथ भी न्याय कर पाता है, क्योंकि वह संसाधनों का अनावश्यक दोहन नहीं करता। उच्च विचार सादगी की भूमि पर ही पनपते हैं; वैभव का बोझ उन्हें दबा देता है। इसलिए जो व्यक्ति सचमुच ऊँचा उठना चाहता है, उसे पहले अपनी इच्छाओं का बोझ हल्का करना सीखना होगा।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

हम अपने घर के आँगन को रोज़ बुहारते हैं, पर दहलीज़ लाँघते ही स्वच्छता की हमारी चिंता समाप्त हो जाती है। घर का कूड़ा गली के मोड़ पर फेंक देना या सार्वजनिक दीवारों पर पान की पीक थूक देना हमें अपराध नहीं लगता। हम मान लेते हैं कि सड़क,

पार्क और स्टेशन की सफ़ाई नगरपालिका का काम है और हमारा दायित्व केवल शिकायत करना है। यही सोच हमारे शहरों को गंदगी के ढेर में बदल रही है। सच यह है कि कोई भी सरकार कितने ही सफ़ाई-कर्मी नियुक्त कर ले, तब तक किसी नगर को स्वच्छ नहीं रख सकती, जब तक उसके नागरिक साथ न दें। **स्वच्छता झाड़ू से कम और आदत से अधिक आती है।** जिस समाज में बच्चे बचपन से ही कूड़ा कूड़ेदान में डालना, पानी व्यर्थ न बहाना और सार्वजनिक वस्तुओं को अपनी संपत्ति समझना सीखते हैं, वहाँ सफ़ाई-अभियानों की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। गंदगी केवल आँखों को नहीं खटकती; वह मच्छरों और बीमारियों को जन्म देती है, जिनकी सबसे बड़ी क़ीमत ग़रीब परिवार चुकाते हैं। इसलिए स्वच्छता को सौंदर्य का नहीं, स्वास्थ्य और न्याय का प्रश्न मानना चाहिए। नागरिक कर्तव्य का अर्थ केवल मतदान करना या कर चुकाना नहीं है; अपने आसपास के सार्वजनिक स्थान को उतना ही साफ़ रखना भी है, जितना हम अपने घर को रखते हैं। जिस दिन हर नागरिक मान लेगा कि गली भी उसका आँगन है, उस दिन स्वच्छता किसी अभियान की नहीं, जीवन-शैली की पहचान बन जाएगी।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) लेखक के अनुसार हमारे शहरों के गंदे रहने का मूल कारण क्या है?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

In March 1930, Mahatma Gandhi set out on foot from Sabarmati Ashram near Ahmedabad with a small band of followers. Their destination was Dandi, a village on the coast of Gujarat. The march was a protest against the salt tax imposed by the British government, under which Indians were not allowed to make their own salt. As the marchers walked from village to village for about twenty-four days, crowds gathered to hear Gandhi speak, and many people joined the procession. On reaching the sea in early April, Gandhi picked up a handful of salt from the shore and broke the law in a simple, peaceful act. His example inspired people across the country to make salt themselves, and the Civil Disobedience Movement spread rapidly.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) रेलवे स्टेशनों पर गंदगी

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: रेलवे स्टेशनों पर फैली गंदगी के संबंध में।

महोदय,

पिछले सप्ताह हावड़ा स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा करते हुए मैंने जो दृश्य देखा, वह मन को खिन्न कर देने वाला था। पटरियों के बीच प्लास्टिक की बोतलें और जूठे दोने बिखरे पड़े थे, शौचालयों की दुर्गंध पूरे प्लेटफ़ॉर्म पर फैली थी और कूड़ेदान ऊपर तक भरकर उफन रहे थे। पीने के पानी के नल के पास कीचड़ जमा था। और यह किसी एक स्टेशन की कहानी नहीं है; उपनगरीय रेलमार्गों के ज़्यादातर छोटे स्टेशनों का भी यही हाल है। रोज़ लाखों यात्री इन्हीं स्टेशनों से आते-जाते हैं, इसलिए यह गंदगी बीमारियों को खुला निमंत्रण है। रेल प्रशासन को चाहिए कि सफ़ाई-कर्मियों की संख्या बढ़ाए, कूड़ा उठाने का समय तय करे और गंदगी फैलाने वालों से जुर्माना सख़्ती से वसूले। यात्रियों को भी समझना होगा कि स्टेशन उनकी अपनी संपत्ति है। आशा है, आप यह पत्र प्रकाशित कर संबंधित अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करेंगे।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 22 अक्टूबर, 2026

परीक्षा-संकेत

आँखों देखे दृश्य से आरंभ करने पर पत्र जीवंत बनता है; पर अंत में समस्या के साथ दो-तीन ठोस सुझाव (सफ़ाई-कर्मी, समय-सारिणी, जुर्माना) अवश्य दें, अंक वहीं मिलते हैं।

(ख) किसानों को फ़सल का उचित दाम न मिलना

सेवा में,
संपादक महोदय,
प्रभात ख़बर,
कोलकाता।

विषय: किसानों को फ़सल का उचित मूल्य न मिलने की समस्या।

महोदय,

शहर के बाज़ार में जो आलू ऊँचे भाव बिकता है, उसे उगाने वाले किसान के हाथ आख़िर क्या आता है? इस वर्ष हुगली और बर्धमान में आलू की भरपूर पैदावार हुई, फिर भी किसानों के चेहरों पर ख़ुशी नहीं, चिंता है। मंडी में व्यापारी इतना कम भाव लगा रहे हैं कि बीज, खाद, सिंचाई और मज़दूरी का ख़र्च भी नहीं निकल रहा। शीतगृहों में जगह कम है, इसलिए छोटे किसान औने-पौने दाम पर फ़सल बेचने को विवश हैं। बिचौलिये किसान से सस्ता ख़रीदकर उपभोक्ता को महँगा बेचते हैं और दोनों ओर से मुनाफ़ा कमाते हैं। सरकार को चाहिए कि समय पर सरकारी ख़रीद शुरू करे, गाँवों के पास ख़रीद-केंद्र खोले, शीतगृह बढ़ाए और किसानों को सीधे बाज़ार से जोड़े। जब तक अन्नदाता को मेहनत का उचित मोल नहीं मिलेगा, खेती घाटे का सौदा बनी रहेगी। कृपया इसे प्रकाशित करें, ताकि बात नीति बनाने वालों तक पहुँचे।

सधन्यवाद,
भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर, 2026

परीक्षा-संकेत

प्रश्नवाचक आरंभ पाठक को तुरंत समस्या से जोड़ देता है; बिचौलियों और भंडारण जैसे कारण गिनाकर उन्हीं के अनुरूप समाधान देने से पत्र संतुलित दिखता है।

(ग) छात्रवृत्ति के भुगतान में देरी

सेवा में,

सचिव,

पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग,

पश्चिम बंगाल सरकार,

कोलकाता।

विषय: पिछड़ा वर्ग छात्रवृत्ति के लंबित भुगतान के संबंध में।

महोदय,

शैक्षणिक सत्र आधा बीत चुका है, किंतु पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति की पहली क़िस्त अब तक हमारे खातों में नहीं पहुँची है। मैं XYZ महाविद्यालय में स्नातक द्वितीय वर्ष का छात्र हूँ। हमने निर्धारित समय में ऑनलाइन आवेदन किया था और महाविद्यालय ने सभी आवेदनों का सत्यापन भी कर दिया था, फिर भी पोर्टल पर महीनों से 'भुगतान लंबित' ही दिख रहा है। हममें से अधिकांश साधारण परिवारों से आते हैं, जिनके लिए यही छात्रवृत्ति फ़ीस, किताबों और छात्रावास के ख़र्च का सहारा है। देरी के कारण कई सहपाठियों को उधार लेना पड़ा है और कुछ तो परीक्षा-शुल्क न भर पाने के डर से पढ़ाई छोड़ने की बात सोचने लगे हैं। अतः विनम्र निवेदन है कि लंबित राशि शीघ्र जारी करवाने की कृपा करें। साथ ही, भविष्य में क़िस्तें सत्र के आरंभ में ही देने और शिकायतें सुनने के लिए एक सहायता-केंद्र खोलने पर भी विचार करें।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर, 2026

परीक्षा-संकेत

सरकारी पत्र में अपना परिचय, आवेदन की स्थिति (आवेदन, सत्यापन, लंबित भुगतान) और स्पष्ट माँग क्रम से रखें; "विनम्र निवेदन है" जैसी औपचारिक भाषा यहाँ अनिवार्य है।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

मेट्रो ने बदली महानगर की रफ़्तार

कोलकाता, 21 अक्टूबर (निज संवाददाता)। सुबह दमदम स्टेशन पर उमड़ी भीड़ देखकर समझना कठिन नहीं कि मेट्रो अब इस शहर की धड़कन बन चुकी है। देश की पहली मेट्रो सेवा 1984 में इसी महानगर में शुरू हुई थी, और अब इसका एक गलियारा हुगली के नीचे से होकर हावड़ा तक पहुँच गया है।

जाम में घंटों खिंचने वाला सफ़र अब मिनटों में सिमट गया है। रोज़ दफ़्तर जाने वाली एक बैंक-कर्मचारी ने बताया कि मेट्रो के कारण वे अब शाम को बच्चों के साथ समय बिता पाती हैं। स्टेशनों के आसपास नई दुकानें और खाने-पीने के ठेले लगने से बाज़ारों की रौनक बढ़ी है। सड़कों पर निजी वाहनों का दबाव घटने से प्रदूषण पर भी कुछ अंकुश लगा है।

तस्वीर का दूसरा पहलू भी है। व्यस्त घंटों में डिब्बों में पैर रखने की जगह नहीं मिलती और किराया निम्न आय वर्ग की जेब पर भारी पड़ता है। नगर-नियोजन के जानकारों का मानना है कि यदि मेट्रो को बस, ट्राम और फ़ेरी सेवाओं से ठीक से जोड़ा जाए, तो इसका लाभ शहर के और बड़े हिस्से तक पहुँचेगा। इतना तय है कि मेट्रो ने महानगर के जीने का ढंग ही बदल दिया है।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> प्रतिवेदन में किसी आम यात्री का कथन जोड़ने से वह समाचार जैसा प्रामाणिक लगता है; लाभ और समस्याएँ अलग अनुच्छेदों में रखें और अंत एक संतुलित निष्कर्ष-वाक्य पर करें।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: सादगी में ही उच्च विचारों का वास

मनुष्य की महानता बाहरी वैभव से नहीं, विचारों से आँकी जाती है। अंतहीन इच्छाओं के पीछे भागता मनुष्य चिंतन और संवेदना का अवकाश खो देता है। सीमित आवश्यकताओं वाला व्यक्ति संतुष्ट और निश्चिंत रहता है तथा प्रकृति का अनावश्यक दोहन भी नहीं करता। सादगी दरिद्रता नहीं, आवश्यक और दिखावटी में भेद करने का विवेक है। हमारे महापुरुषों ने इसी के बल पर समाज को दिशा दी। अतः ऊँचा उठने के लिए इच्छाओं का बोझ घटाना आवश्यक है।

(मूल गद्यांश: 214 शब्द; सार: 77 शब्द)

> **परीक्षा-संकेत**
>
> यहाँ परीक्षक सबसे पहले "सादगी दरिद्रता नहीं, विवेक है" वाला भेद खोजेगा, क्योंकि गद्यांश का केंद्रीय तर्क वही है; प्रकृति के दोहन वाली बात भी एक वाक्यांश में अवश्य आए।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है — **"गली भी अपना आँगन"** अथवा **"स्वच्छता: एक नागरिक कर्तव्य"**। पूरा गद्यांश इस विचार के इर्द-गिर्द घूमता है कि हम घर को तो साफ़ रखते हैं, पर सार्वजनिक स्थानों की सफ़ाई को दूसरों का काम मान लेते हैं। लेखक का आग्रह है कि नागरिक सड़क, पार्क और स्टेशन को भी अपने घर जैसा समझें। अंतिम वाक्य में यही भाव "गली भी उसका आँगन है" के रूप में सामने आता है, इसलिए यह शीर्षक संक्षिप्त होने के साथ-साथ गद्यांश के मूल संदेश को भी पूरी तरह व्यक्त करता है।

(ख) शहरों के गंदे रहने का मूल कारण

लेखक के अनुसार हमारे शहरों की गंदगी का मूल कारण हमारी सोच है, साधनों की कमी नहीं। हम मान बैठे हैं कि सड़क, पार्क और स्टेशन की सफ़ाई केवल नगरपालिका का दायित्व है और हमारा काम बस शिकायत करना है। इसी मानसिकता के कारण हम कूड़ा गली के मोड़ पर फेंक देते हैं और दीवारों पर पीक थूकते हुए भी कोई अपराध-बोध अनुभव नहीं करते। लेखक स्पष्ट कहता है कि सरकार चाहे जितने सफ़ाई-कर्मी नियुक्त कर दे, नागरिकों के सहयोग के बिना कोई नगर स्वच्छ नहीं रह सकता।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

"स्वच्छता झाड़ू से कम और आदत से अधिक आती है" — इस पंक्ति का आशय है कि सफ़ाई केवल सफ़ाई-कर्मियों के झाड़ू लगाने या समय-समय पर अभियान चलाने से स्थायी नहीं बनती। झाड़ू फैली हुई गंदगी को हटाती भर है, जबकि अच्छी आदतें उसे फैलने ही नहीं देतीं। यदि बच्चे बचपन से कूड़ा कूड़ेदान में डालना, पानी बचाना और सार्वजनिक वस्तुओं की देखभाल करना सीख लें, तो सफ़ाई जीवन का सहज अंग बन जाती है। लेखक के अनुसार स्वच्छता बाहरी प्रयास से अधिक भीतरी संस्कार का परिणाम है।

(घ) सारांश

हम घर तो साफ़ रखते हैं, पर सार्वजनिक स्थानों की सफ़ाई को नगरपालिका का काम मानकर स्वयं लापरवाह बने रहते हैं। यही सोच शहरों को गंदा बना रही है, क्योंकि नागरिकों के सहयोग के बिना कोई सरकार नगर को स्वच्छ नहीं रख सकती। स्वच्छता बचपन से डाली गई आदतों से आती है। गंदगी बीमारियाँ फैलाती है, जिसका सबसे बड़ा दंड ग़रीबों को भुगतना पड़ता है; इसलिए यह स्वास्थ्य और न्याय का प्रश्न है। सच्चा नागरिक वही है जो गली को भी अपना आँगन समझे।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> सारांश में गद्यांश के उदाहरण (पान की पीक, गली के मोड़ पर कूड़ा) छोड़ दें और केवल तर्क की कड़ियाँ रखें; "स्वास्थ्य और न्याय" वाली बात न छूटे, यही गद्यांश का नया विचार है।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

मार्च 1930 में महात्मा गांधी अपने कुछ साथियों के साथ अहमदाबाद के पास स्थित साबरमती आश्रम से पैदल निकल पड़े। उनकी मंज़िल थी गुजरात के समुद्र-तट पर बसा गाँव दांडी। यह यात्रा ब्रिटिश सरकार के लगाए नमक-कर के विरोध में थी; उस क़ानून के चलते भारतीय अपना नमक ख़ुद भी नहीं बना सकते थे। लगभग चौबीस दिनों तक यह जत्था गाँव-गाँव होता हुआ आगे बढ़ता रहा। जगह-जगह गांधीजी को सुनने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी और बहुत-से लोग यात्रा में शामिल होते गए। अप्रैल के आरंभ में समुद्र के किनारे पहुँचकर गांधीजी ने तट से मुट्ठी भर नमक उठाया और एक सीधे-सादे, शांतिपूर्ण क़दम से क़ानून तोड़ दिया। उनसे प्रेरणा लेकर देश भर में लोग ख़ुद नमक बनाने लगे और सविनय अवज्ञा आंदोलन तेज़ी से फैल गया।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> अनुयायियों के "छोटे दल" को "कुछ साथियों के साथ" लिखा और "जत्था" शब्द अगले वाक्य के लिए बचाया; नमक-कर वाले लंबे उपवाक्य को अर्धविराम के बाद "उस क़ानून के चलते..." से अलग किया; "सरल, शांतिपूर्ण कार्य" को "सीधे-सादे, शांतिपूर्ण क़दम" लिखा, जो हिंदी में अधिक स्वाभाविक है।

अभ्यास प्रश्न-पत्र 9

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

किसी एक विषय पर पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें):

(क) रक्तदान के प्रति लोगों में जागरूकता की कमी पर चिंता प्रकट करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ख) शहर के तालाबों और झीलों को पाटकर उन पर निर्माण किए जाने के विरोध में किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ग) अपने क्षेत्र की राशन दुकान में हो रही अनियमितताओं की शिकायत करते हुए खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के अधिकारी को पत्र लिखिए (सरकारी कार्यालय को पत्र)।

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

पहाड़ों में बढ़ते पर्यटन का पर्यावरण पर असर (दार्जिलिंग के संदर्भ में)

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

साहस को प्रायः हम रणभूमि की वीरता से जोड़कर देखते हैं, मानो वह केवल तलवार उठाने वालों का गुण हो। किंतु जीवन का अधिकांश साहस चुपचाप, बिना तालियों की गूँज के, घटित होता है। जो विद्यार्थी असफलता के बाद फिर से किताब खोलता है, जो रोगी पीड़ा के बीच भी मुस्कराकर अगली सुबह की प्रतीक्षा करता है, जो कर्मचारी अपने अधिकारी के अनुचित आदेश को विनम्रता से ठुकरा देता है, वे सब उसी साहस के रूप हैं जिसकी चर्चा इतिहास की पुस्तकें कम ही करती हैं। साहस का अर्थ भय का अभाव नहीं है। भय तो मनुष्य का स्वाभाविक साथी है; साहसी वह है जो भय को पहचानते हुए भी कर्तव्य के मार्ग से नहीं डिगता। निर्भीकता कभी-कभी अज्ञान से भी उपजती है, पर सच्चा साहस विवेक की कोख से जन्म लेता है। वह जानता है कि जोखिम क्या है, फिर भी सत्य का साथ चुनता है। सबसे कठिन साहस अपने ही भीतर झाँकने का है: अपनी भूल स्वीकार करना, अपने पूर्वाग्रहों से जूझना और भीड़ की राय के विरुद्ध अकेले खड़े हो जाना। जिस समाज में साधारण लोगों का ऐसा साहस जीवित रहता है, वहाँ अन्याय देर तक टिक नहीं पाता। साहस किसी एक क्षण का उबाल नहीं, रोज़-रोज़ साधा जाने वाला अभ्यास है।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

एक समय था जब शाम ढलते ही घर का आँगन बातचीत से भर उठता था। दादी अपने ज़माने के क़िस्से सुनातीं, पिता दिन भर की उलझनें बाँटते और बच्चे विद्यालय की छोटी-छोटी घटनाएँ बढ़ा-चढ़ाकर बताते। उस बातचीत का कोई विशेष विषय नहीं होता था, फिर भी वही परिवार को एक सूत्र में बाँधे रखती थी। आज वही घर अलग-अलग कमरों में बँट गया है। सब एक ही छत के नीचे हैं, पर हर कोई अपनी स्क्रीन में डूबा है। खाने की मेज़ पर भी हाथ थाली में रहते हैं और आँखें मोबाइल पर।

इस चुप्पी के पीछे केवल तकनीक नहीं है। नौकरी की भागदौड़, लंबी यात्राएँ, प्रतियोगिता का दबाव और एकल परिवारों का अकेलापन भी उतने ही ज़िम्मेदार हैं। माता-पिता थककर लौटते हैं और बच्चों से केवल अंकों और गृहकार्य का हिसाब पूछ पाते हैं। बच्चे अपनी उलझनें मित्रों या अनजान आभासी दुनिया से बाँटने लगते हैं। बुज़ुर्ग, जिनके पास सुनाने को सबसे अधिक होता है, सुनने वाले की राह देखते-देखते चुप हो जाते हैं। **संवाद के अभाव में रिश्ते टूटते नहीं, धीरे-धीरे सूख जाते हैं।** यही सूखापन आगे चलकर ग़लतफ़हमी, अवसाद और पीढ़ियों के बीच गहरी खाई का रूप ले लेता है।

इसका उपचार कठिन नहीं है। दिन में कुछ समय ऐसा हो जब घर के सब लोग फ़ोन अलग रखकर साथ बैठें, एक-दूसरे की बात बिना टोके सुनें और छोटी-छोटी ख़ुशियाँ बाँटें। परिवार की असली पूँजी वही बातचीत है जो बिना कारण, बस अपनेपन से होती है।

(क) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

(ख) लेखक के अनुसार परिवारों में आपसी संवाद घटने के कौन-कौन से कारण हैं?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

The Howrah Bridge, renamed Rabindra Setu in 1965 in honour of Rabindranath Tagore, spans the Hooghly River and links Howrah with Kolkata. Opened to traffic in 1943, it replaced an old floating pontoon bridge that could no longer cope with the city's growing traffic. It is a cantilever bridge built of steel, and no pillars stand in the river beneath its main span, so boats and ships pass freely below. Every day it carries a huge number of vehicles and an even larger crowd of people on foot, many of them travellers arriving at Howrah station. For more than eighty years it has remained a symbol of Kolkata, appearing in countless photographs and films. It is not just a bridge; it is part of the city's identity.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) रक्तदान के प्रति जागरूकता की कमी

सेवा में,
संपादक महोदय,

दैनिक विश्वमित्र,
कोलकाता।

विषय: रक्तदान के प्रति लोगों में जागरूकता की कमी।

महोदय,

बीते शनिवार की रात हमारे मोहल्ले की एक प्रसूता को अस्पताल में तुरंत ख़ून चढ़ाने की ज़रूरत पड़ी। अस्पताल के रक्त-कोष में उसके रक्त-समूह का ख़ून नहीं था और परिजन रात भर फ़ोन घुमाते रहे। अंत में एक अनजान युवक ने रक्त देकर उसकी जान बचाई। ऐसी घटनाएँ अब अपवाद नहीं रहीं। गर्मियों और त्योहारों के दिनों में अधिकांश रक्त-कोषों में ख़ून की कमी हो जाती है, क्योंकि नियमित रक्तदाता बहुत कम हैं।

लोगों के मन में यह भ्रम बैठा है कि रक्त देने से शरीर कमज़ोर हो जाता है या कोई रोग लग सकता है, जबकि स्वस्थ व्यक्ति निश्चित अंतराल पर बिना किसी हानि के रक्तदान कर सकता है। यदि विद्यालयों, महाविद्यालयों और दफ़्तरों में नियमित शिविर लगें, रक्तदाताओं को सम्मानित किया जाए और स्वास्थ्य विभाग सरल भाषा में प्रचार करे, तो यह स्थिति बदल सकती है। आशा है, आपका प्रतिष्ठित पत्र इस विषय को प्रमुखता से उठाएगा।

सधन्यवाद,
भवदीय
XYZ
पता: XYZ
दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

रक्तदान से जुड़ा कोई प्रचलित भ्रम लिखकर उसी वाक्य में तथ्य से उसका खंडन करें; इससे विषय की समझ झलकती है। सुझाव भी ठोस हों: शिविर, रक्तदाताओं का सम्मान और सरल भाषा में प्रचार।

(ख) शहर के तालाबों और झीलों का पाटा जाना

सेवा में,
संपादक महोदय,
सन्मार्ग,
कोलकाता।

विषय: शहर के तालाबों और झीलों को पाटे जाने पर रोक की माँग।

महोदय,

इस बरसात की पहली तेज़ बारिश में ही हमारी गलियाँ घुटनों तक पानी में डूब गईं। इसका एक बड़ा कारण वे तालाब और झीलें हैं जो चुपचाप शहर के नक़्शे से मिटती जा रही हैं। जिस पोखर के किनारे हम बचपन में मछलियाँ देखा करते थे, वहाँ आज बहुमंज़िला इमारत खड़ी है। रात के अँधेरे में मलबा डालकर जलाशय पाटे जाते हैं और जल्द ही वहाँ ज़मीन बिकने लगती है।

ये जलाशय केवल पानी के गड्ढे नहीं हैं। ये वर्षा का जल समेटते हैं, भूजल को भरते हैं, गर्मी घटाते हैं और पक्षियों को आश्रय देते हैं। इन्हें खोकर हम बाढ़, जल-संकट और बढ़ते तापमान को न्योता दे रहे हैं। प्रशासन को चाहिए कि सभी जलाशयों का सर्वेक्षण कराकर उनकी सीमाएँ तय करे, पाटने वालों पर कठोर कार्रवाई करे और मोहल्ला समितियों को उनकी देखरेख में भागीदार बनाए। आपका समाचार-पत्र इस आवाज़ को अधिकारियों तक पहुँचाए, यही अनुरोध है।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

किसी ताज़ा घटना (पहली बारिश का जलभराव) से आरंभ करके उसे तुरंत कारण से जोड़ें; जलाशयों के तीन-चार लाभ एक ही वाक्य में गिना दें, ताकि सुझावों के लिए शब्द बचें।

(ग) राशन दुकान में अनियमितता (खाद्य एवं आपूर्ति विभाग को पत्र)

सेवा में,

खाद्य एवं आपूर्ति अधिकारी,

खाद्य एवं आपूर्ति विभाग,

पश्चिम बंगाल सरकार,

कोलकाता।

विषय: हमारे क्षेत्र (XYZ) की उचित मूल्य की दुकान में हो रही अनियमितताओं की शिकायत।

महोदय,

हमारे क्षेत्र की उचित मूल्य की दुकान पिछले तीन महीनों से महीने में मुश्किल से चार-पाँच दिन खुलती है, और वह भी दुकानदार की मर्ज़ी के समय पर। कार्डधारियों को पूरा अनाज नहीं मिलता, तौल में कमी आम बात है और चावल में अक्सर कंकड़ मिले रहते हैं। पूछने पर दुकानदार "माल नहीं आया" कहकर लौटा देता है, जबकि उसी दुकान का अनाज खुले बाज़ार में ऊँचे दामों पर बिकने की चर्चा है। दुकान पर न मूल्य-सूची लगी है, न भंडार का ब्योरा, और शिकायत-पुस्तिका माँगने पर दुर्व्यवहार किया जाता है। सबसे अधिक कष्ट बुज़ुर्गों और दिहाड़ी मज़दूरों को होता है, जिनके लिए यही अनाज जीवन का सहारा है।

अतः आपसे निवेदन है कि इस दुकान का औचक निरीक्षण कराया जाए, दोष सिद्ध होने पर अनुज्ञप्ति रद्द करने सहित उचित कार्रवाई की जाए और वितरण की नियमित निगरानी की व्यवस्था की जाए।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

सरकारी पत्र में शिकायतें क्रम से और तथ्य के रूप में रखें (समय, तौल, गुणवत्ता, मूल्य-सूची), भावुकता कम रखें; अंत में "औचक निरीक्षण" जैसी स्पष्ट माँग अंक दिलाती है।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

भीड़ के बोझ से कराहते पहाड़: दार्जिलिंग की सहनशक्ति पर संकट

कोलकाता, 21 अक्टूबर (निज संवाददाता)। पहाड़ों की रानी कहलाने वाला दार्जिलिंग इन दिनों पर्यटकों की बढ़ती भीड़ से हाँफ रहा है। छुट्टियों के मौसम में संकरी पहाड़ी सड़कों पर घंटों जाम लगना आम हो गया है। स्थानीय निवासियों और पर्यावरणविदों का कहना है कि पर्यटन ने रोज़गार तो दिया है, पर पहाड़ की सहनशक्ति की अनदेखी भारी पड़ने लगी है।

होटलों और होमस्टे की माँग पूरी करने के लिए ढलानों पर अंधाधुंध निर्माण हो रहा है। जानकारों के अनुसार कमज़ोर ढलानों पर खड़ी इमारतें भूस्खलन का ख़तरा बढ़ा रही हैं। पानी की किल्लत पहले से थी, होटलों की बढ़ती खपत ने आम घरों के नल और सुखा दिए हैं। प्लास्टिक की बोतलें, पैकेट और कचरा झरनों तथा जंगलों तक पहुँच रहा है, जबकि कचरा-निपटान व्यवस्था इस बोझ के लिए तैयार नहीं।

विशेषज्ञों का सुझाव है कि पर्यटकों की संख्या मौसम के हिसाब से नियंत्रित हो, निर्माण के नियम सख़्ती से लागू किए जाएँ, प्लास्टिक पर रोक का पालन कराया जाए और टॉय ट्रेन तथा सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा मिले। प्रशासन ने स्वच्छता अभियान की बात कही है, पर लोगों का मानना है कि जब तक पर्यटक ज़िम्मेदारी नहीं समझेंगे, पहाड़ की साँसें यों ही उखड़ती रहेंगी।

परीक्षा-संकेत

प्रतिवेदन को समस्या, कारण और समाधान के तीन अनुच्छेदों में बाँटें; "जानकारों के अनुसार", "स्थानीय निवासियों का कहना है" जैसे स्रोत-संकेत गढ़े हुए आँकड़ों से कहीं अधिक विश्वसनीय लगते हैं।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: साहस: भय पर विवेक की विजय

साहस केवल युद्ध की वीरता नहीं; वह साधारण जीवन में चुपचाप दिखता है, जैसे असफलता के बाद फिर जुट जाना या अनुचित आदेश को विनम्रता से ठुकराना। साहसी भयहीन नहीं होता, वह भय के रहते भी कर्तव्य से नहीं डिगता। सच्चा साहस विवेक से उपजता है, और सबसे कठिन है अपनी भूल मानना तथा भीड़ के विरुद्ध अकेले खड़े होना। रोज़ के अभ्यास से आया यही साहस समाज में अन्याय को टिकने नहीं देता।

(मूल गद्यांश: 205 शब्द; सार: 74 शब्द)

परीक्षा-संकेत

विद्यार्थी, रोगी और कर्मचारी, तीनों उदाहरण न गिनाएँ; दो को "जैसे..." से जोड़ना काफ़ी है। "साहस भय का अभाव नहीं" वाला विचार इस सार की रीढ़ है, उसे छोड़ने पर अंक कटेंगे।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

उपयुक्त शीर्षक है: **"मौन होते घर"**।

यह शीर्षक इसलिए उपयुक्त है कि पूरा गद्यांश उसी बदलाव के बारे में है जिसमें बातचीत से भरे रहने वाले घर धीरे-धीरे चुप हो गए हैं। लेखक पहले उस आँगन का चित्र खींचता है जहाँ शाम को दादी, पिता और बच्चे सब अपनी बातें बाँटते थे, फिर आज के उस घर को दिखाता है जहाँ सब एक छत के नीचे रहकर भी अपनी-अपनी स्क्रीन में खोए हैं। "मौन होते" शब्द यह भी बताता है कि यह चुप्पी अचानक नहीं आई, धीरे-धीरे फैली है। विकल्प के रूप में "परिवार में घटता संवाद" शीर्षक भी दिया जा सकता है।

परीक्षा-संकेत

शीर्षक छोटा और आकर्षक रखें, फिर दो-तीन वाक्यों में बताएँ कि वह गद्यांश के आरंभ, मध्य और अंत से कैसे जुड़ता है; केवल शीर्षक लिखकर छोड़ने पर पूरे अंक नहीं मिलते।

(ख) संवाद घटने के कारण

लेखक के अनुसार परिवारों में आपसी संवाद घटने का दोष केवल तकनीक पर नहीं डाला जा सकता। मोबाइल और स्क्रीन ने सबको अपने-अपने कमरों में समेट दिया है, यहाँ तक कि खाने की मेज़ पर भी आँखें फ़ोन पर रहती हैं। पर इसके साथ नौकरी की भागदौड़, दफ़्तर आने-जाने की लंबी यात्राएँ, पढ़ाई में आगे निकलने की होड़ तथा एकल परिवारों का अकेलापन भी उतने ही ज़िम्मेदार हैं। थके हुए माता-पिता बच्चों से केवल अंकों और गृहकार्य की बात कर पाते हैं, इसलिए बच्चे अपने मन की बातें मित्रों या आभासी दुनिया से बाँटने लगते हैं और बुज़ुर्ग सुनने वाले के अभाव में चुप हो जाते हैं।

परीक्षा-संकेत

"कौन-कौन से कारण" वाले प्रश्न में गद्यांश के सभी कारण गिनाएँ और उनका असर भी एक वाक्य में जोड़ें; लेखक का "केवल तकनीक नहीं" वाला संकेत उत्तर के आरंभ में ही रखें।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

रेखांकित पंक्ति है: "संवाद के अभाव में रिश्ते टूटते नहीं, धीरे-धीरे सूख जाते हैं।"

लेखक कहना चाहता है कि बातचीत बंद होने से परिवार में कोई बड़ा झगड़ा या अलगाव तुरंत दिखाई नहीं देता। लोग साथ रहते हैं, रिश्ते नाम के लिए बने रहते हैं, पर उनमें अपनापन और गर्माहट कम होती जाती है। बातचीत रिश्तों को सींचने वाला जल है। पानी न मिले तो पौधा एक दिन में नहीं मरता, धीरे-धीरे मुरझाता है; रिश्ते भी वैसे ही चुपचाप कुम्हलाते हैं। उनमें भावनाओं की नमी नहीं रहती और संबंध सूखे, औपचारिक ढाँचे भर रह जाते हैं। लेखक के अनुसार यही सूखापन आगे चलकर ग़लतफ़हमी, अवसाद और पीढ़ियों के बीच खाई को जन्म देता है।

परीक्षा-संकेत

आशय लिखते समय पंक्ति के रूपक ("सूख जाना") को खोलें और "टूटने" तथा "सूखने" का अंतर स्पष्ट करें; अंत में गद्यांश के अगले वाक्य से जोड़ देने पर उत्तर पूरा लगता है।

(घ) सारांश

पहले घर की शामें बातचीत से भरी रहती थीं और यही बातचीत परिवार को जोड़े रखती थी। आज सब एक छत के नीचे होकर भी अपनी स्क्रीन में डूबे रहते हैं। इसके पीछे तकनीक के साथ नौकरी की भागदौड़, प्रतियोगिता का दबाव और एकल परिवारों का अकेलापन भी है। संवाद के बिना रिश्ते धीरे-धीरे रूखे हो जाते हैं और ग़लतफ़हमियाँ तथा अवसाद बढ़ते हैं। रोज़ कुछ समय फ़ोन अलग रखकर साथ बैठना और एक-दूसरे को सुनना ही इसका उपाय है।

परीक्षा-संकेत

सारांश में गद्यांश के तीनों अनुच्छेदों (अतीत, कारण, उपाय) का एक-एक भाव अवश्य आए; मूल वाक्य या मोटे अक्षरों वाली पंक्ति ज्यों-की-त्यों न उतारें।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

हावड़ा ब्रिज, जिसे 1965 में रवींद्रनाथ ठाकुर के सम्मान में "रवींद्र सेतु" नाम दिया गया, हुगली नदी के ऊपर फैला है और हावड़ा को कोलकाता से जोड़ता है। सन् 1943 में यातायात के लिए खोले गए इस पुल ने पीपों पर टिके उस पुराने तैरते पुल की जगह ली, जो शहर के बढ़ते यातायात का बोझ अब और नहीं सँभाल पा रहा था। यह इस्पात से बना एक कैंटिलीवर पुल है। इसके मुख्य हिस्से के नीचे नदी में एक भी खंभा नहीं है, इसलिए नावें और जहाज़ बेरोक-टोक नीचे से निकल जाते हैं। हर दिन इस पर से अनगिनत वाहन गुज़रते हैं, और पैदल चलने वालों की संख्या तो उससे भी कहीं अधिक होती है; इनमें बहुत-से लोग हावड़ा स्टेशन पर उतरे यात्री होते हैं। अस्सी से अधिक वर्षों से यह पुल कोलकाता की पहचान बना हुआ है और न जाने कितनी तस्वीरों तथा फ़िल्मों में दिखाई देता रहा है। यह केवल एक पुल नहीं, शहर की अस्मिता का हिस्सा है।

परीक्षा-संकेत

"पीपों पर तैरने वाले पुल" के लिए "पीपों पर टिका तैरता पुल" लिखा, जो हिंदी पाठक को तुरंत चित्र दे देता है; "कैंटिलीवर" पुल-निर्माण का तकनीकी नाम है, इसलिए उसे लिप्यंतरण में ही रखा; अंतिम वाक्य में "पहचान" शब्द पहले आ चुका था, इसलिए दोहराव से बचने के लिए "अस्मिता" चुना।

अभ्यास प्रश्न-पत्र 10

समय: 3 घंटे · **पूर्णांक:** 200 · सभी प्रश्न अनिवार्य हैं; प्रत्येक प्रश्न 40 अंक का है।

प्रश्न-पत्र

प्रश्न प्रश्न 1 · 40 अंक

किसी एक विषय पर पत्र लिखिए (अधिकतम 150 शब्दों में। नाम और पते के स्थान पर XYZ लिखें):

(क) किशोरों में ऑनलाइन खेलों की बढ़ती लत पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ख) सरकारी विद्यालयों में दिए जा रहे मध्याह्न भोजन की गिरती गुणवत्ता की ओर ध्यान दिलाते हुए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

(ग) अपने मोहल्ले से नियमित रूप से कचरा न उठाए जाने की शिकायत करते हुए नगरपालिका के अध्यक्ष को पत्र लिखिए (सरकारी कार्यालय को पत्र)।

प्रश्न प्रश्न 2 · 40 अंक

निम्नलिखित विषय पर 200 शब्दों में एक संपादकीय प्रतिवेदन लिखिए:

महिला क्रिकेट की बढ़ती लोकप्रियता और गाँव-क़स्बों की लड़कियाँ

प्रश्न प्रश्न 3 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का सारांश लिखिए:

अपने सुख की चिंता सबसे पहले करना मनुष्य का स्वभाव है। इसमें कोई बुराई भी नहीं, क्योंकि जो स्वयं को नहीं सँभाल सकता, वह दूसरों का सहारा क्या बनेगा। किंतु जीवन यदि केवल अपनी झोली भरने तक सिमट जाए, तो वह उस तालाब जैसा हो जाता है जिसमें पानी आता तो है, पर कहीं जाता नहीं; धीरे-धीरे वह सड़ने लगता है। प्रकृति हमें दूसरा ही पाठ पढ़ाती है। नदी अपना जल स्वयं नहीं पीती, वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते और बादल धरती पर बरसकर ही सार्थक होते हैं। हमारे पूर्वजों ने इसी भाव को परोपकार कहा और उसे सबसे बड़ा धर्म माना।

परोपकार का अर्थ केवल दान देना नहीं है। भूखे को भोजन कराना जितना बड़ा काम है, उतना ही बड़ा काम किसी निराश व्यक्ति से दो मीठे बोल बोलना या किसी अनपढ़ बच्चे को अक्षर सिखाना भी है। धन सबके पास नहीं होता, पर समय, श्रम और सहानुभूति हर किसी के पास होती है। सच्चा परोपकारी बदले की आशा नहीं रखता और अपने किए का ढिंढोरा भी नहीं पीटता। प्रचार के लिए किया गया उपकार, उपकार नहीं, व्यापार बन जाता है।

दूसरों के लिए जीने वाला स्वयं भीतर से समृद्ध होता चला जाता है। उसे जो संतोष मिलता है, वह किसी बाज़ार में नहीं बिकता। समाज ऐसे ही लोगों के कंधों पर टिका रहता है।

प्रश्न प्रश्न 4 · 10 × 4 = 40 अंक

प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

हर साल त्योहार बीतते ही गाँवों के छोटे रेलवे स्टेशनों पर एक जैसा दृश्य दिखाई देता है। पीठ पर थैला, हाथ में पोटली और आँखों में अनिश्चितता लिए नौजवान महानगरों की ओर जाने वाली गाड़ियों में ठसाठस भरे होते हैं। पीछे रह जाते हैं बूढ़े माँ-बाप, सूने आँगन और ऐसे खेत, जिन्हें जोतने वाले हाथ अब कम पड़ने लगे हैं।

इस पलायन के कारण किसी से छिपे नहीं हैं। खेती अब पहले जैसा लाभ नहीं देती, ज़मीन बँटते-बँटते छोटी हो गई है और गाँवों में ढंग का रोज़गार नहीं है। अच्छे विद्यालय, अस्पताल और आगे बढ़ने के अवसर भी शहरों में ही सिमटे हुए हैं। ऐसे में युवा का शहर की ओर देखना स्वाभाविक है। किंतु शहर भी उसे खुली बाँहों से नहीं अपनाता। झुग्गियों की तंग कोठरियाँ, कम मज़दूरी और अकेलापन उसकी नियति बन जाते हैं। **वह न पूरी तरह शहर का हो पाता है, न लौटकर गाँव का रह जाता है।** उधर गाँव धीरे-धीरे बूढ़ों और बच्चों की बस्ती बनते जा रहे हैं।

इसका हल युवाओं को रोकने में नहीं, गाँवों को इस योग्य बनाने में है कि वहाँ रहना मजबूरी नहीं, अपना चुनाव बन सके। खेती से जुड़े छोटे उद्योग, स्थानीय उपज का प्रसंस्करण, अच्छी सड़कें, इंटरनेट और कौशल-प्रशिक्षण गाँवों में नई जान फूँक सकते हैं। जब गाँव में ही इज़्ज़त की रोटी मिलने लगेगी, तब त्योहार के बाद स्टेशनों का वह दृश्य भी बदलेगा।

(क) गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

(ख) लेखक के अनुसार युवा गाँव क्यों छोड़ते हैं और शहर में उन्हें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

(ग) रेखांकित (मोटे अक्षरों वाली) पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(घ) गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न प्रश्न 5 · 40 अंक

निम्नलिखित गद्यांश का हिंदी में अनुवाद कीजिए (Translate into Hindi):

In the early 1950s, Satyajit Ray was working as a commercial artist in an advertising agency in Calcutta, but his heart lay in cinema. He dreamed of turning Bibhutibhushan Bandyopadhyay's novel *Pather Panchali*, the story of a poor village family seen through the eyes of a little boy named Apu, into a film. No producer was willing to trust a first-time director, so Ray began shooting with his own savings and a small, inexperienced team of friends. Money ran out again and again, and shooting stopped for long periods. Help finally came from the Government of West Bengal. When the film was released in 1955, audiences were moved by its simple truth, and Indian cinema found a new voice.

हल · प्रश्न 1 · पत्र-लेखन

(क) किशोरों में ऑनलाइन खेलों की लत

सेवा में,
संपादक महोदय,
प्रभात ख़बर,
कोलकाता।

विषय: किशोरों में ऑनलाइन खेलों की बढ़ती लत के संबंध में।

महोदय,

रात के बारह बजे भी हमारे मोहल्ले के कई घरों में मोबाइल की नीली रोशनी जलती दिखती है। झाँककर देखिए तो कोई चौदह-पंद्रह साल का किशोर कानों में इयरफ़ोन लगाए किसी ऑनलाइन खेल में डूबा मिलेगा।

पढ़ाई से जी चुराना, देर रात तक जागना, बात-बात पर चिढ़ जाना और खेल के मैदान से दूरी, ये इस लत के आम लक्षण हैं। कई खेलों में पैसे देकर हथियार या अंक ख़रीदने पड़ते हैं, जिसके लिए बच्चे माँ-बाप से झूठ बोलने और चोरी-छिपे पैसे ख़र्च करने लगे हैं। ऊपर से आँखें कमज़ोर हो रही हैं और नींद अधूरी रहती है।

आपसे निवेदन है कि इस विषय पर अभिभावकों और विद्यालयों को जगाने वाली सामग्री नियमित छापें। विद्यालयों में परामर्शदाता हों, घरों में मोबाइल का समय तय हो और सरकार ऐसे खेलों पर उम्र और समय की सख़्त सीमा लागू करे। बच्चों को फिर से मैदान तक लौटाना हम सबकी साझा ज़िम्मेदारी है।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

संपादक को लिखे पत्र में समस्या के साथ अख़बार से ठोस अपेक्षा (जागरूकता-सामग्री छापना) अवश्य लिखें; केवल शिकायत लिखने पर अंक कटते हैं।

(ख) सरकारी विद्यालयों में मध्याह्न भोजन की गुणवत्ता

सेवा में,

संपादक महोदय,

दैनिक विश्वमित्र,

कोलकाता।

विषय: सरकारी विद्यालयों में मध्याह्न भोजन की गिरती गुणवत्ता के संबंध में।

महोदय,

हमारे क्षेत्र के कई सरकारी विद्यालयों में दोपहर के भोजन के नाम पर इन दिनों पानी जैसी पतली दाल और अधपके चावल ही परोसे जा रहे हैं। कभी सब्ज़ी के नाम पर केवल आलू का पानी मिलता है, तो कभी चावल में कंकड़ और कीड़े निकल आते हैं। अंडा या फल, जो नियम से मिलने चाहिए, महीनों से नहीं दिखे।

यह योजना इसलिए शुरू हुई थी कि ग़रीब घरों के बच्चे भूखे पेट न पढ़ें और विद्यालय आने का उन्हें एक कारण मिले। किंतु रसोई की गंदगी और घटिया अनाज के कारण कई अभिभावक अब बच्चों को घर से खाना बाँधकर भेजने लगे हैं। पिछले महीने एक विद्यालय में भोजन के बाद कुछ बच्चे बीमार भी पड़े।

आपके माध्यम से शिक्षा विभाग से माँग है कि रसोई का नियमित निरीक्षण हो, भोजन की जाँच में अभिभावकों को शामिल किया जाए और लापरवाह आपूर्तिकर्ताओं पर कड़ी कार्रवाई हो।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

पत्र संपादक को है, पर माँग उस विभाग से रखें जो ज़िम्मेदार है ("आपके माध्यम से शिक्षा विभाग से..."); योजना का मूल उद्देश्य एक वाक्य में बता देने से शिकायत का वज़न बढ़ता है।

(ग) मोहल्ले से नियमित कचरा न उठना

सेवा में,

अध्यक्ष,

दक्षिण दमदम नगरपालिका,

कोलकाता।

विषय: XYZ मोहल्ले से नियमित रूप से कचरा न उठाए जाने के संबंध में।

महोदय,

हमारे मोहल्ले के नुक्कड़ पर कचरे का ढेर पिछले दो सप्ताह से ज्यों-का-त्यों पड़ा है। दिन भर आवारा पशु उसे बिखेरते रहते हैं, और रात को उठने वाली दुर्गंध के कारण आसपास के घरों की खिड़कियाँ खोलना मुश्किल हो गया है। बरसात का पानी मिलने से वहाँ मच्छर पनप रहे हैं और कई घरों में लोग बुख़ार से पीड़ित हैं।

पहले नगरपालिका की गाड़ी हर सुबह आती थी, पर अब वह कभी-कभार ही दिखती है। सफ़ाईकर्मियों से पूछने पर बताया जाता है कि गाड़ियाँ कम हैं। हमने वार्ड कार्यालय में दो बार लिखित शिकायत भी दी, किंतु कोई सुनवाई नहीं हुई।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि हमारे मोहल्ले से प्रतिदिन कचरा उठवाने की व्यवस्था की जाए, नुक्कड़ पर ढका हुआ कूड़ादान रखवाया जाए और वहाँ कीटनाशक का छिड़काव कराया जाए। हम निवासी भी गीला और सूखा कचरा अलग करके देने में पूरा सहयोग करेंगे।

सधन्यवाद,

भवदीय

XYZ

पता: XYZ

दिनांक: 22 अक्टूबर 2026

परीक्षा-संकेत

सरकारी पत्र में पहले की गई शिकायतों का उल्लेख और नागरिकों की ओर से सहयोग का आश्वासन, दोनों जोड़ें; इससे पत्र औपचारिक और संतुलित लगता है।

हल · प्रश्न 2 · प्रतिवेदन

गाँव-क़स्बों की बेटियों ने थामा बल्ला, महिला क्रिकेट को मिली नई ज़मीन

कोलकाता, 22 अक्टूबर 2026 (निज संवाददाता)। कुछ साल पहले तक गाँव की गलियों में बल्ला थामे लड़की को देखकर लोग हँस देते थे, पर अब वही लड़कियाँ क़स्बों के मैदानों में अभ्यास करती दिखती हैं। भारतीय महिला टीम की अंतरराष्ट्रीय सफलताओं, टेलीविज़न पर मैचों के सीधे प्रसारण और महिला प्रीमियर लीग जैसे आयोजनों ने इस खेल को घर-घर पहुँचा दिया है।

राज्य के कई ज़िलों में क्रिकेट अकादमियों के प्रशिक्षकों का कहना है कि लड़कियों के दाख़िले के लिए पूछताछ पहले से कहीं अधिक हो रही है। हुगली ज़िले की एक प्रशिक्षु की माँ ने बताया, "पहले रिश्तेदार ताने देते थे, अब वही पूछते हैं कि बिटिया का मैच कब है।" खिलाड़ियों को मिलने वाली पहचान और पुरस्कार-राशि ने अभिभावकों का नज़रिया बदला है।

फिर भी राह आसान नहीं है। छोटे क़स्बों में लड़कियों के लिए अलग शौचालय, कपड़े बदलने के कमरे, अच्छे मैदान और महिला प्रशिक्षकों की कमी है। खेल का सामान महँगा होने से कई प्रतिभाएँ बीच में ही रुक जाती हैं।

खेल-विशेषज्ञों का मानना है कि यदि ज़िला स्तर पर नियमित प्रतियोगिताएँ, छात्रवृत्ति और सुरक्षित आवागमन की व्यवस्था हो, तो भारतीय टीम की कई भावी खिलाड़ी इन्हीं गाँव-क़स्बों से निकलेंगी।

परीक्षा-संकेत

शीर्षक में घटना और उसका असर दोनों आएँ, जैसे यहाँ; बीच में किसी अभिभावक का एक छोटा कथन और अंत में विशेषज्ञों की राय रखने से प्रतिवेदन आरंभ से अंत तक समाचार की शैली में बना रहता है।

हल · प्रश्न 3 · सार-लेखन

शीर्षक: परोपकार ही सच्चा धर्म

अपनी चिंता करना स्वाभाविक है, पर केवल अपने लिए जिया गया जीवन ठहरे पानी की तरह सड़ जाता है। नदी, वृक्ष और बादल की भाँति दूसरों के लिए जीना ही परोपकार है, जिसे भारतीय परंपरा ने सबसे बड़ा धर्म माना। परोपकार धन से ही नहीं, समय, श्रम और सहानुभूति से भी होता है। निःस्वार्थ और प्रचार-रहित उपकार ही सच्चा है। ऐसा व्यक्ति आंतरिक संतोष पाता है और समाज को टिकाए रखता है।

(मूल गद्यांश: 217 शब्द; सार: 72 शब्द)

परीक्षा-संकेत

गद्यांश के तीन अनुच्छेदों का क्रम (स्वार्थ और परोपकार, परोपकार के रूप, उसका फल) सार में भी बना रहे; "उपकार नहीं, व्यापार" जैसी सूक्ति ज्यों-की-त्यों न उतारें, उसका भाव ("प्रचार-रहित") लिखें।

हल · प्रश्न 4 · गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) उपयुक्त शीर्षक

गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है: **"सूने होते गाँव: युवाओं का शहरों की ओर पलायन"**।

यह शीर्षक इसलिए उचित है कि पूरा गद्यांश इसी समस्या के इर्द-गिर्द घूमता है। पहले अनुच्छेद में गाँव छोड़कर जाते नौजवानों और पीछे छूटे सूने आँगनों का चित्र है, दूसरे में पलायन के कारण और शहर में युवाओं की दुर्दशा का वर्णन है, और तीसरे में गाँवों को आत्मनिर्भर बनाकर इस समस्या के समाधान की बात कही गई है। "सूने होते गाँव" शब्द पीछे रह गए गाँव की पीड़ा को सामने लाते हैं, जबकि "युवाओं का पलायन" गद्यांश का मुख्य विषय स्पष्ट कर देता है। इस प्रकार शीर्षक संक्षिप्त भी है और गद्यांश के केंद्रीय भाव को पूरी तरह समेटता भी है।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> लंबा शीर्षक देना हो तो मुख्य शीर्षक और उपशीर्षक को उपविराम (:) से जोड़ें, जैसे यहाँ; औचित्य बताते समय गद्यांश के तीनों अनुच्छेदों से एक-एक संकेत उठाएँ।

(ख) गाँव छोड़ने के कारण और शहर की कठिनाइयाँ

लेखक के अनुसार युवाओं के गाँव छोड़ने के पीछे कई कारण हैं। खेती अब पहले जैसा लाभ नहीं देती और पीढ़ी-दर-पीढ़ी बँटते रहने से ज़मीन के टुकड़े छोटे हो गए हैं। गाँवों में कोई ढंग का रोज़गार नहीं है, और अच्छे विद्यालय, अस्पताल तथा आगे बढ़ने के अवसर भी शहरों तक सिमटे हुए हैं। इसलिए युवा का शहर की ओर देखना स्वाभाविक है।

किंतु शहर भी उसका स्वागत नहीं करता। उसे झुग्गियों की तंग कोठरियों में रहना पड़ता है, मेहनत के बदले कम मज़दूरी मिलती है और परिवार से दूर अकेलापन झेलना पड़ता है। लेखक के शब्दों में ये कठिनाइयाँ उसकी नियति बन जाती हैं।

> **परीक्षा-संकेत**
>
> "कारण" और "कठिनाइयाँ" को अलग-अलग अनुच्छेदों में लिखें; दो भागों वाले प्रश्न में दोनों का स्पष्ट उत्तर दिखने से अंक सुरक्षित रहते हैं।

(ग) रेखांकित पंक्ति का आशय

रेखांकित पंक्ति है: "वह न पूरी तरह शहर का हो पाता है, न लौटकर गाँव का रह जाता है।"

इस पंक्ति में लेखक पलायन करने वाले युवा की दुविधा भरी स्थिति बताता है। रोज़ी-रोटी के लिए वह शहर जाता है, पर तंग कोठरियों, कम मज़दूरी और अकेलेपन के बीच उसे वहाँ न अपनापन मिलता है, न सम्मान; इसलिए वह शहर का नहीं हो पाता। दूसरी ओर, गाँव लौटने का रास्ता भी लगभग बंद हो जाता है, क्योंकि वहाँ आजीविका का कोई साधन नहीं है और वर्षों बाहर रहने से गाँव से उसका जुड़ाव भी ढीला पड़ जाता है। इस प्रकार वह दो दुनियाओं के बीच अधर में लटका रह जाता है। पंक्ति पलायन की गहरी मानवीय पीड़ा को व्यक्त करती है।

परीक्षा-संकेत

आशय लिखते समय पहले पंक्ति उद्धृत करें, फिर उसके दोनों हिस्सों (शहर और गाँव) को अलग-अलग खोलें; अंत में एक वाक्य में भावार्थ समेटें।

(घ) सारांश

रोज़गार, अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य-सुविधाओं के अभाव तथा घटती खेती-आय के कारण युवा बड़ी संख्या में गाँव छोड़कर शहर जा रहे हैं। शहर में भी उन्हें तंग बस्तियाँ, कम मज़दूरी और अकेलापन ही मिलता है, और वे दो दुनियाओं के बीच अटके रह जाते हैं। उधर गाँव बूढ़ों-बच्चों के भरोसे रह गए हैं। इसका उपाय गाँवों में छोटे उद्योग, उपज-प्रसंस्करण, सड़क, इंटरनेट और कौशल-प्रशिक्षण से सम्मानजनक आजीविका पैदा करना है, ताकि शहर जाना मजबूरी न रहे।

परीक्षा-संकेत

सारांश एक ही अनुच्छेद में, मूल के लगभग एक-तिहाई शब्दों में रखें; स्टेशन, थैले और पोटली जैसे दृश्य-चित्र सारांश में नहीं आते, केवल उनसे निकला निष्कर्ष आता है।

हल · प्रश्न 5 · अनुवाद

उन्नीस सौ पचास के दशक के आरंभ में सत्यजित राय कलकत्ता की एक विज्ञापन एजेंसी में व्यावसायिक चित्रकार के रूप में काम कर रहे थे, पर उनका मन तो सिनेमा में रमा था। उनका सपना था कि बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय के उपन्यास 'पथेर पांचाली' पर फ़िल्म बनाएँ। यह उपन्यास एक ग़रीब ग्रामीण परिवार की कहानी है, जिसे अपू नाम के एक छोटे बालक की आँखों से देखा गया है। कोई भी निर्माता पहली बार फ़िल्म बना रहे निर्देशक पर भरोसा करने को तैयार नहीं था, इसलिए राय ने अपनी जमा-पूँजी लगाकर मित्रों की एक छोटी-सी टोली के साथ फ़िल्मांकन शुरू कर दिया। इस टोली को फ़िल्म बनाने का लगभग कोई अनुभव नहीं था। बार-बार पैसा चुक जाता और काम लंबे समय तक रुका रहता। आख़िरकार पश्चिम बंगाल सरकार से सहायता मिली। सन् 1955 में जब फ़िल्म प्रदर्शित हुई, तो उसकी सहज सच्चाई ने दर्शकों के मन को छू लिया और भारतीय सिनेमा को एक नया स्वर मिला।

परीक्षा-संकेत

- मूल का "दिल सिनेमा में था" वाला मुहावरा "उनका मन तो सिनेमा में रमा था" लिखा गया; शाब्दिक "दिल सिनेमा में पड़ा था" अटपटा लगता।
- लंबे अंग्रेज़ी वाक्य को, जिसमें उपन्यास का परिचय बीच में जुड़ा है, दो हिंदी वाक्यों में तोड़ा गया, ताकि क्रिया अंत में सहज ढंग से आए।
- "सरल सत्य से द्रवित हुए" के स्थान पर "सहज सच्चाई ने मन को छू लिया" जैसी कर्तृवाच्य रचना रखी गई, जो हिंदी की प्रकृति के अनुकूल है।